अक्षय पात्र

अक्षय पात्र

(कविता संग्रह)

झौली पासवान

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

AKSHAY PATRA
Anthology of Maithili poems by Shri Jhauli Paswan

ISBN: 978-93-93135-51-3
सर्वाधिकार: © लेखक (श्री झौली पासवान)
पहिल संस्करण: 2023
दाम: 250/- (भा.रु.)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

दू शब्द

झोली पासवान लऽ कऽ आयल छथि अपन पहिल काव्य संग्रह 'अक्षय पात्र'। प्रजातंत्रक रीढ़ शिक्षाक दुर्गतिपर ओ चिन्तित छथि, जंगल बोन कटलासँ अमंगल देखि रहल छथि। मुदा 'कर्णेषु प्रिय' मे ध्वनि तरंग द्वारा मानवता आ बन्धुत्व भाव भरल जेबासँ आह्लादित सेहो छथि। प्रकृतिपर 'आएल बादल' पद्य सेहो लिखै छथि। दार्शनिक कविता मे 'रंग मंच' पद्य बिम्बात्मक अछि। 'कामिनी' श्रृंगार रसपर अछि, विद्यापति मोन पाड़ि दइ छथि जखन ओ कहै छथि- मेघमे बिजुरीक रेखा/दिगदिगन्त धरि छिटकल। 'बीनल जाल' मे ओ बहुजन समाजक शैतानक बनल जालमे फँसल रहबाक प्रति सजगताक अनुभव करबैत छथि। बाल कवितामे 'बौआ'क चर्चामे हुनका कखनो ओ राम, कखनो कृष्ण, कखनो रहमान आ कखनो यीसू मसीह सन देखाइत छन्हि, बच्चा तँ भगवानक रूप होइते अछि। 'पसरल निरासा' कोरोना महामारीपर अछि। 'उपदेशक' मे सौंसे सह-सह करैत धर्म उपदेशक आ गली-गलीमे वैद्यक उपस्थितिक अछैत अधर्म आ जादूटोनाक बढ़ैत जेबापर ओ विचार करै छथि, अंग्रेजक बदला नेता सभ सह-सह करैत अछि मुदा जनताकेँ नेतृत्व विहीन पबै छथि। झोली पासवानक 'अक्षय पात्र' एहन पात्र अछि जइमेसँ कतबो भोजन, पकमान, मर-मधुर निकालू ओ कहियो सधत नै।

- गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह

अप्पन बात

माइ मैथिली गोर लगै छी
शीश नबाए आशीष मंगै छी।
जएह बजै छी सएह लिखै छी
तइसँ बेसी नहि जनै छी।

प्रस्तुत पोथी 'अक्षय पात्र' हमर मैथिलीक पहिल संग्रह छी। अइ पोथीक विषय वस्तु पूर्णत: यथार्थक धरातलपर गढ़ल अछि जाहिमे कल्पनाक गुंजाइस बड़ कम अछि। प्रकृतिसँ लऽ कऽ सामाजिक, राजनैतिक आ देशक शिक्षा व्यवस्थाक संगहि देशक युवा वर्गमे पसरल बेरोजगारी आ श्रमिकक दशा-दिशाक वर्णन अइ पोथीमे स्पष्ट रूपसँ भेटत। देशमे पसरल अन्धविश्वास, दलित उत्पीड़न, धर्मान्धता आ वर्गभेद कोन तरहेँ आइयो देशक विकासमे समस्या बनिकऽ ठाढ़ अछि से सभटा अइ पोथीमे भेटत।

दू साए वर्षक गुलामीक बाद अप्पन देश आजाद भेल। अप्पन संविधान बनल आ अप्पन घरमे अप्पन हाथ-बाट भेल 'अनेकानेक वैज्ञानिक आविष्कारो भेल जइसँ लोकक जीवन शैली बदैल गेल। मुदा लोकक मानसिकता पहिलुके जकाँ संकीर्ण रहिये गेल। लोक जीबैत तँ अछि वर्तमान वैज्ञानिक युगमे मुदा भूतक नाँगैर आइयो धरि पकड़नहि अछि। आशय ई जे लोक आइयो मानसिक रूपसँ गुलामे अछि। कोनो प्रजातांत्रिक देशक रीढ़ ओकर शिक्षा होइत अछि। आइ पचहत्तैर वर्षक आजादीक बादो अप्पन देशक शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ नहि भए सकल, आइ हमरा देशमे द्विआधारी शिक्षा अछि। एक वर्गक बच्चा सभ सुविधा सम्पन्न आलीशान मकानमे पढ़ि रहल अछि जेतए बच्चा सभक लेल सभटा सुविधा उपलब्ध छइ। आ बहुजन समाजक बच्चा सभ आइयो गाछक निच्चाँ आ पोखरिक भिण्डापर पढ़ि रहल अछि। हम ईहो नहि कहि सकै छी जे

सरकारी स्तरपर प्रयास नहि भेल अछि। वर्त्तमान सरकार शिक्षाकेँ सुधारबाक लेल बहुतो प्रयास नहि कऽ रहल अछि। वर्त्तमान सरकार शिक्षाकेँ सुधारबाक लेल बहुतो प्रयास केलक अछि आ कइयो रहल अछि। सर्वशिक्षा अभियानक माध्याह्न भोजन, साइकिल आ पोशाक योजना बहुजन समाजक बच्चा सभकेँ खूब आकर्षित केलक अछि। मुदा तैयो बहुजन समाजक बच्चा सभक शिक्षामे अपेक्षित सुधार नहि भऽ सकल अछि। तेकर कारण अछि गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक अभाव। आइयो सरकारी विद्यालयक शिक्षामे गुणवत्ताक अभाव अछि। परिणाम ई होइत अछि जे सरकारी विद्यालयक बच्चा सभ बिच्चेमे पढ़ाइ छोड़ि बाल मजदूर बनि जाइत अछि। एहने बच्चा सभ देशमे बालमजदूरक संख्याकेँ बढ़ा रहल अछि। तइले देशमे द्विआधारी शिक्षा व्यवस्था उत्तरदायी अछि। सरकारी विद्यालयक स्थिति ई अछि जे शिक्षकलोकनि वेतन लइ छथि सरकारसँ आ टैक्स दइ छथिन निजी कम्पनीकेँ। आशय ई जे एक्कोटा सरकारी स्कूलक शिक्षकक बच्चासभ सरकारी विद्यालयमे नहि पढ़ि रहल छैन जे सरकारी स्कूलक शिक्षामे गुणवत्ताक अभाव दिस संकेत करैत अछि। 'मंत्री हो वा गरीबक सन्तान, सभक शिक्षा एक समान' आ तखने देशमे समताक अंकुरण नीक जकाँ भऽ सकत। सरकारी विद्यालयमे गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक अभाव अछि तइले सरकारियो व्यवस्था कम उत्तरदायी नहि अछि। मध्याह्न भोजनसँ लऽ कऽ जनगणना, पशुगणना आ अनेकानेक योजना सभमे शिक्षके सभकेँ उलझा कऽ राखल जाइत अछि। एनामे तँ पढ़ाइसँ माने अध्ययन-अध्यापनसँ, शिक्षकक मन उचटबे ने करतैन। एक राष्ट्रक बात तँ खूब करै छी मुदा देशक शिक्षा एक नहि..!! ई नीति केहेन? राष्ट्र एक अछि आ एक रहबे करत। पहिने अप्पन प्रजातंत्रक रीढ़ ने मजगूत करू।

आइ मानवीय मूलय घटि रहल अछि। युवा वर्ग बेरोजगार भऽ रहल अछि। देखिये रहल छी, शरावक अवैध धन्धाकेँ रोकैले सरकार केतेक अपस्यांत अछि। अबैध शरावक धन्धेबाज कतेको बेर पुलिस-प्रशासनकेँ सेहो परेशन कऽ चुकल अछि आ कइयो रहल अछि। युवा वर्गक सेहो नैतिक पतन भऽ रहल अछि। आइ हजेरक हजेर युवा वर्ग गाँजा-भाँगक निशाँमे बर्बाद भऽ रहल अछि। एकान्त चौक-चौराहा आ कोनो मन्दिरक इर्द-गीर्द गाँजा-भाँगक व्यवसाय खूब चलि रहल अछि। आ नव पीढ़ीकेँ बर्बाद कए रहल अछि। तँए, शरावबन्दिये टा

नहि नशा बन्दियोपर धियान देब अपेक्षित।

देशमे अमीर-गरीबक बीच जे खाइ बनि रहल अछि ओ प्रजातंत्रक लेल नीक संकेत नहि अछि। केन्द्र हो वा राज्य दुनू सरकार मुनाफाखोर बनि गेल अछि। ओ भरलेकेँ खूब भरैत अछि आ खाली खालीए रहि जाइत अछि। जे जिनगी भरि नोकरी केलक आ थैली भरि रूपैआ घर अनलक वएह सम्विदापर खटए आ बेराजगार बेचारा भुखले मरए। के बूझत ओइ बेराजगारक पीड़ाकेँ। कहबाक लेल हमर देश कृषि प्रधान अछि। मुदा दिन राति कृषि कार्यमे लागल मजदूरक दशा ठीक कहाँ अछि। ओ तँ सूपक भांटा बनल अछि भांटा।

कोनो देशक विकासमे ओइ देशक श्रमशक्तिक महत्वपूर्ण भूमिका होइत अछि। मुदा सरकार श्रम शक्तिक प्रति केतेक सम्वेदनशील अछि तकर प्रमाण तँ कोरोनाकालमे भेटिये गेल। जेतए-तेतए मजदूर सभ खुरछाँरी कटिते रहल आ सरकार कोरोनाकालकेँ सुअवसर बुझिते रहल। अमीरक बालकनीपर थारी पिटाइते रहल।

प्रकृतिमे मनुक्खकेँ जीवश्रेष्ठ कहल गेल अछि। मुदा ओकर कृतघ्नता आ स्वार्थपरायणता ओकर जीवश्रेष्ठतापर प्रश्नचिह्न लगा रहल अछि। ओ जंगलकेँ काटि वन्य जीवकेँ आश्रयहीन बना रहल अछि। वन्य जीव जंगल छोड़ि गाम दिस भागि रहल अछि। आ स्वार्थी मनुक्ख ओकरा पाछू दौड़ रहल अछि। आँखिक देखल अछि जे कोनो माल-मवेशीक मरलापर बहुतो रास गिद्ध उतैर जाइत छल। आ चट्टहि मवेशीक मृतक शरीरकेँ खा लइ छल। आ पर्यावरण स्वच्छ भऽ जाइ छल। आइ गिद्ध हमरा नजैरसँ ओझल अछि। आइ कोनो मवेशी मरलाक बाद दीर्घावधि धरि पड़ले रहि जाइत अछि। आ हमरा सभ नाक मुइन आवाजाही करैत रहै छी।

बहुतो रास सामाजिक परम्परा हमरा समाजकेँ भीतरसँ खोखला बना रहल अछि। आइ दहेज प्रथा सामाजिक परम्परा बनि गेल अछि। नीतिवान बनि हम दहेजक विरोधमे गुलछर्रा तँ उड़ा लइ छी मुदा अप्पन बेटाक बिआहक समयमे हम बेटीक बापकेँ पानि फेंटल दूध जकाँ नापए लगै छी। कहू तँ ई केहेन परम्परा! गाम हो वा शहर, देश हो वा प्रदेश आइयो सौंसे दलित उत्पीड़न बढ़िये रहल अछि। 'तरमे कारी ऊपरमे महंकारी' समाजिक व राजनैतिक परिवेश

ऊपरसँ साफ-सुथरा आ भीतरे भीतर बीमार अछि। आइ सभटा धार्मिक परम्परा उन्मादक रूप धेने जा रहल अछि। आब इंसानियत रहिये कहाँ गेल।

बाहर इजोत घर गुज-गुज अन्हार
घृणित हाड़ पूजित पहाड़ ई आस्था।
देखू मानवता बिलइख रहल
सर्वत्र धार्मिक उन्मादसँ।।

आइ पचहत्तैर सालक बादो बाह्य आडम्बर आ अन्धविश्वास हमरा समाजमे पसरले अछि। हम अप्पन मनकेँ बुझेबाक लेल पूजा-पाठ तँ कऽ लइ छी। मुदा पूजा-पाठसँ बेसी आडम्बरकेँ पालिकऽ रखने छी। हम वर्ग भेद आ लिंग भेदकेँ बढ़ावा दइये रहल छी। धर्मक ओतमे पलैत धार्मिक उन्माद समाज आ देशक शान्ति व्यवस्थाकेँ भंग कऽ रहल अछि। अन्ध विश्वास तेतेक बढ़ि गेल अछि जे आइयो समाजमे माए-बहिनकेँ डायन कहि ओकरा अपमानित कएल जा रहल अछि। विशिष्टवाद आ स्वार्थ परायणताक कारणेँ हम सेवा भावना आ विश्वकल्याणक भावनाकेँ बिसैर रहल छी। आइ वैश्विक राष्ट्र तेतेक अन्हरा गेल अछि जे वैश्विक पर्यावरणकेँ सेहो प्रभावित कऽ देत। आइ अठारह माससँ रूस-युक्रेन युद्ध चलि रहल अछि। दुनू देश अप्पन आनिपर अटल अछि। अइ तरहेँ अणु-परमाणुक गरमी ई धरती कहिया धरि सहि सकत? विश्वकल्याणकहित मनुक्खक भावना कहिया धरि जागत। आर्थिक समृद्धिमे खूब बढ़ोतरी भऽ रहल अछि। संगहि स्वार्थपरायणता सेहो मनुक्खमे बड़ बढ़ि गेल अछि। जइ कारणेँ बूढ़ बुजुर्गलोकनि अप्पन घरमे अपनहि सन्तानसँ उपेक्षित भऽ गेल छथि। आइ अधिकतर जिलामे वृद्धा आश्रम खुलि गेल अछि। तेकर माने एतबे नहि जे हम बूढ़-बुजुर्गक प्रति बड़ सम्वेदनशील छी। एकर माने ईहो अछि जे बूढ़-बुजुर्गक सेवा-टहल करवाक लेल हमरा लग समय नहि अछि। हम मुद्रा राक्षसक पाछू दिन-राति व्यस्त रहै छी।

ओना तँ हम मैथिली हिन्दी पहिनौंसँ लिखैत रहलौं अछि तथापि मैथिलीमे ई हमर पहिल पोथी अछि। कोनो साहित्यपर समय आ दशाक प्रभाव रहिते अछि आ से अहू पोथीमे भेटत। प्रभात संस्थामे काज करैत हम मुसहर आ धांगर समाजक बच्चा सभमे अप्पन हिन्दी आ मैथिलीक रचनासँ शैक्षिक

जागरूकता लाबैत रहलौं अछि। मुदा कोनो रचनाकेँ हम संग्रह नै करै छेलौं। ओ जेतए-तेतए फेंकाइये जाइ छल। एकरा संयोगे कहब जे सन..... मे प्रभात संस्थाक द्वारा समाजक बच्चा सभसँ वृहत स्तरपर सांस्कृतिक कार्यक्रम करौल गेल। अइ कार्यक्रमक सभटा भार हमरे ऊपर दए देल गेल। हम खुश भेलौं जे प्रभात संस्था हमरा अइ योग बुझलक। अइ कार्यक्रममे तत्कालीन जिला पदाधिकारी श्री संजीव हंस (मधुबनी) सेहो आएल छला। ओ बच्चा सभक कार्यक्रम अद्योपान्त देखलैन, सुनलैन। हुनका जनतब भेलैन जे हमहीं अइ तरहक कार्यक्रमक विषय-वस्तु गढ़ै छी आ हमहीं नेन्ना सभसँ मंचनो कराबै छी। दोसरे दिन शिक्षा केन्द्र चलेबाक समयमे जिला सम्पर्क विभाग मधुबनीक एकटा टीम सागरपुर शिक्षा केन्द्र पर पहुँचल। टीम बच्चा सभकेँ बालोपयोगी कार्यक्रम पर्दापर देखौलक। टीमक लोक हमरा सलाह देलक जे अहाँ अप्पन रचनाक संग्रह करू आ पोथी छपाउ। हम बड़ प्रभावित भेलौं आ तहियेसँ रचनाक उपयोगिता सेहो बुझए लगलौं। संयोगसँ 2015 इस्वीमे राजभाष विभाग, पटनासँ प्रकाशन अनुदान लेल विज्ञप्ति निकलल आ हमहूँ अप्पन हिन्दी भाषाक पाण्डुलिपि प्रकाशन अनुदान लेल भेजलौं। पाण्डुलिपि प्रकाशन अनुदान लेल हमरो रचना स्वीकृत भेल। हम 'सोलह सुमन पदावली'क पोथी छपौलौं। तहियेसँ हम जिला अन्तर्जिलामे हिन्दी आ मैथिलीक गोष्ठी सभमे भाग लैत रहलौं। 'सगर राति दीप जरय' (मैथिली कथा गोष्ठी)मे हम अप्पन उपस्थिति दर्ज कराबैत रहलौं अछि। मैथिलीक मूर्धन्य लेखक, समीक्षक आ मैथिली साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी हमरा कतोक बेर कहलैन 'यौ झौली जी, अहाँ अप्पन संग्रहकेँ प्रकाशित करबाऊ।' मुदा कहबी छै 'छुच्छे हाथ मुँह नै पड़ै छै'। अर्थाभावक कारणेँ अनठियाबैत रहलौं। पैछला 'सगर राति दीप जरय' कथा गोष्ठी खुटौनामे भेल छल। प्रगतिशील लेखक संघ मधुबनीक सचिव श्री अरविन्द प्रसादजीक संग ओइ कार्यक्रममे हम खुटौना गेल रही। फेरो श्री जगदीश बाबू संग्रहक प्रकाशनक मादे हमरासँ पुछिये देला। हम सकुचा सन गेलौं। ओ हमर मोनक बात ताड़ि गेला। ओ कहलैन, 'अहाँ उमेशजी सँ मिलू'। उमेशजी जगदीश बाबूक सुपुत्र कर्मठ युवक, बहुतोरास पोथीक लेखक आ प्रकाशक सेहो छथि। दुनू बाप-बेटाक संक्रियताक कारणेँ प्रस्तुत पोथी 'अक्षय पात्र' अपने लेकनिक सम्मुख

अछि। हम श्री जगदीश बाबूकेँ कोटिश: धन्यवाद दइ छिऐन आ श्री उमेश मण्डलजीकेँ अन्तर आत्मासँ आशीर्वाद दइ छिऐन जे ओ उदीयमान सूर्य जकाँ चमकैथ आ यशस्वी बनैथ। अरविन्द प्रसादजी, सुभेश कुमार झाजी, श्री प्रीतम कुमार निषादजी, हीरा लाल सहनीजी, शुभ कुमार वर्णवालजी आर वीरेन्द्र झाजीक सानिध्यमे रहि हम प्रेरित होइत रहलौं अछि। तँए हिनकोलोकनिकेँ धन्यवाद। पाठकलोकनिसँ आग्रह जे अपने पोथीमे निहित शब्द आ वाक्यक आन्तरिक भावपर ध्यान दी आ अप्पन सुझाव आ विचारसँ अवगत कराबी।

जय मिथिला.! जय मैथिली..!!

- झौली पासवान

वीरसायर

तिथि : 05 सितम्बर 2023

काव्य-क्रम

प्रजातंत्रक रीढ़/17

दिन गरमाएल/18

जंगलमे मंगल/20

प्रकृतिक रूप/21

कर्णेषु प्रिय/22

आएल बादल/23

रंग मंच/25

कामिनी/26

लकीर/27

ओकाइत/29

बनगी/30

मजगूत परत/32

विकल जिनगी/33

की कसूर अछि/34

कहरि/35

शब्द/37

अक्षय पात्र/38

ई चिन्ता/39

चिन्ता आ चिन्तन/41

निर्मल धार/42

सराबोर/43

विश्वकर्मा सन्तान/45

प्रतिबन्धित आजादी/46

कचोटल मन/48

चिनगारी/49

साधना/50

गाँठ/52

मनुक्खक जिनगी/53

आकृति/55

तालमेल/56

एक कप चाह/58

शून्य मनसँ/59

पिछलग्गू/60

कर्म पथ/61

तीन वरदान/62

चिल्होरिया/63

फूल वरसाबथि/65

पीढ़ी-दर-पीढ़ी/67

पहिले बम गिराय हम/68
मतारी/69
हम्मर मामी/70
दादीसँ/72
चारपर कौआ/73
तित्तिर रानी/75
गमगीन/77
बीनल जाल/78
सर्वोत्तम ऐना/80
बिढ़नीक छत्ता/81
धनेशक बिआह/82
गुदगुदी/48
अतीतक कहबी/85
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई/87
बौआ/88
ताम-झाम/90
माताक आँचर/91
लाल किरण/93
दमन चक्र/94
अप्पन जिनगी/95
माटिक पुतला/97

चंचल/98

बेटी/100

खानाबदोश/102

गंगा लाभ/105

पसरल निरासा/107

परम्परा/109

बसन्त बहार/111

उन्माद/112

भूतक नाँगैर/114

छाप अमिट/115

जगजाहिर/117

अठन्नी/118

उपदेशक/120

गिरहकट्ट/121

धार्मिक/122

प्रजातंत्रक रीढ़

शासन, प्रशासन अपस्यांत
अपस्यांत जन प्रतिनिधियो।
नहि रूकि रहल धन्धा शराबक
सौंसे मचि रहल अफरातफरी।

की कारण? की समाधान से?
बूझब नैतिक कर्तव्य जनतोक
अइ समस्याक समाधानहित
सभ मीलि बैस विचार करी।

गिर रहल लोकक नैतिकता
तँए बढ़ए अनैतिक कारोबार।
लाखो युवक भटकए सड़कपर
नहि मिलए जेकरा रोजगार।

केन्द्रक हो वा हो प्रदेशक
सरकार मुनाफाखोर बनल।
तुष्टीकरणक नीति दुनूक
दुनू भरलेकेँ खूब भरए।

जे केलक जिनगी भरि नोकरी
थैली भरि पैसा घर अनलक।
ओएह संविदापर खटए
आ बेरोजगार सभ भूखे मरए।

प्रजातंत्रक रीढ़ जे शिक्षा
तेकरो हालत नीक कहाँ
शिक्षा बँटल दू भागमे
समताक दर्शन बनत केना।

एक राष्ट्रक बात करी
शिक्षा नहि एक, ई नीति केहेन।
एक सभ सुविधा सम्पन्न
आ एक चांचरमे भटकए।

आइ धरि नहि विकासशील
विकसित रहैत ई देश अप्पन
उतारि सकितौं जँ धरतीपर
समताक सुन्दर सिद्धान्त हम। ❑

दिन गरमाएल

दिन गरमाएल ताबा समान
रातुक गुमकी केलक हरान।
विकल उड़न छू नीड़हि कानए
राति-रातिभरि कुक्कुर कानए।

पुरबा खेलि रहल धुरखेल
घरसँ निकलब दुर्लभ भेल।

अछि सबहक साँसतिमे प्राण
तोड़ि देलक ई सबहक शान।

धह-धह जरए बिराड़ किसानक
गिरल ने बीहैन मरूआ धान।
बैसल भय मजबूर किसान
आँखि निपोड़ि ताकए असमान।

धरतीक माथमे भरल रूस्सी
जेना ठेकल वारि पतालमे।
फाटल अछि दरारि खेतमे
हिया हारि बैसल किसान।

सुखल जलाशय, पोखैर-झाँखैर
झूलैस गेल अछि घास-पात
गाछक फुनगी फुलैस गेल
आ छुच्छे रमैक रहल पुरबैया।

व्याकुल गृहणी आँगनमे
व्याकुल मजदूर बथानपर।
बमैछ-बमैछ सभ भागए
चौराहाक पाकरिक गाछतर।

केतए जाएत ओ नव कनियाँ
तारम-तोर डोलाबए पंखा

किल्हारि मारि रहल छै नेन्ना
चिकपकल जेकरा कोरमे।

राति इजोरिया चकमक चान
गाबए स्त्रीगण मेघक गान
बरसू-बरसू मेघा रानी
बरइस करू जन-जनक कल्याण। ❑

जंगलमे मंगल

जंगलसँ छल मंगल घर-घर
जंगल कटल अमंगल भेल।
पास-परोस आ बारी-झाड़ी
सौंसे आइ उदंगर भेल।

जड़ी-बुटीक भरमार जेतए छल
कहू आइ केतए चलि गेल।
जंगलसँ केलक सभ बैर
अप्पन कुल्हरि अपनहि पैर।

तोड़लक नाता जड़ी-बुटीसँ
अंग्रेजी दबाइयक चलन बढ़ि गेल।
रसायनिक प्रक्रियासँ बनल दवाइ
हितगर संगहि अहितगर भेल।

अंगरेजिया दवाइपर निर्भरता

यथाशीघ्रहि बन्न करू।

चट्टहि लाभ तँ बड़ नीक लागत
आ नहि तँ मन चिन्तित भेल।
केलक रिएक्शन जँ दवाइ तँ
सौंसे घर हलचल मचि गेल।

जंगल बचाउ मंगल करू
पर्यावरणक संरक्षक बनूँ। ❑

प्रकृतिक रूप

दिशा चतुर्दिक डगमग डोलल
काँपि गेल थर-थर भू-गोल।
केलक आघात सहस्त्रोक
तेतेक प्रचण्ड आएल भू-चाल।

खंडहरमे तब्दील भेल
शहरक आलीशान मकान।
जे खंडहर से बनल टीला
मेटा देलक ई सबहक शान।

बेचैन राजा रंक एतए
सबहक नजैरमे खौफ आइ।
क्रन्दन त्राहिमामक पुकार
आम बात भऽ गेल आइ।

बिखरल ढेरो अण्डा सड़कपर
बिलखय काँटपर चूजा घनेरो।
जख्मीसँ भरल चिकित्सालय
चिकित्सको अछि जख्मी आइ।

लागए डेराओन दिशा चतुर्दिक
आसमान भेल टुह-टुह लाल।
संरक्षक संसारक युग-युगसँ
बदलल प्रकृतिक रूप आइ। ❑

कर्णेषु प्रिय

कर्णेषु ध्वनि तरंग प्रिय
उमंग मनमे भरि रहल।
एहने तरंग लोकमे
वन्धुत्व भाव भरि रहल।

बांछित इएह तरंग मनुक्खमे
गुण मानवताक भरि रहल।

कर्णेषुध्वनि तरंग अप्रिय
हुर्दंग मचाबए मनमे।
ई शान्ति भंग करएबला
विष उगलैत अछि काननमे।

दुष्प्रभाव छोड़ए समाजमे
भाव विकृतिक कारण इएह।

कर्णेषुध्वनि तरंग कर्कश
मनकेँ विचलित करएबला
रोगीकेँ रोग बढ़ाबएबला
अनिष्ठकेँ न्यौता देबएबला।

एहनेध्वनि अछि विषक थैला
वातावरणकेँ करए मैला।

भलहिं जाति आ धर्म अनेक
देशमे शिक्षा होअए एक।
तखने स्वर-मे-स्वर मिलत
मानवता केर बल मिलत।

मुट्ठी भरि लोक नै चाहए एहेन
जे जीब रहल सामन्त जकाँ। ❑

आएल बादल

दूर देशसँ आएल बादल
पर्वतसँ टकराएल बादल।
गिरल पिछैड़ कऽ धरती तलपर
एतए रूप बदललक बादल।

कहियासँ प्यासल धरतीकेँ
अमृतक घोंट पियौलक बादल।

गरैज-गरैज कऽ पूरब-पच्छिम
नभमे शोर मचौलक बादल।
बादलसँ टकराएल बादल
भेल सघन आ फाटल बादल।

आसमानमे डंका बजा कऽ
गरमीकेँ ललकारलक बादल।

करए हरवाह साहोर-साहोर
डेराएल राहगीर पकड़लक ठौर।
नेन्ना सभ दुबकल कोनामे
सभकेँ भेल ठनकाक खौफ।

घुमक्कड़ शरारती बच्चा सभकेँ
अप्पन घरे भगौलक बादल।

सुक्खल नदी आ नहरिमे
पानिक रूपमे उतरल बादल।
उछलल झील, उछलल तलाब
चांचरमे जल उतारलक बादल।

सूपक सूप उझललक जल
भेल उदार प्यारा बादल। ❑

रंग मंच

रंग मंचपर ठाढ़ छी हम
आँखि अप्पन मुइन कऽ।
आन्हरक किरदार हम्मर
नाटकक सरदार हम।

नै अछि मालूम हमरा, कहिया
केना होएत पटाक्षेप ऐ नाटकक।

हम अनाड़ी रंगकर्मी
कहए सभ हमरा अदाकार।
सजि-धजि कऽ, बनि-ठनिकऽ
ठाढ़ छी हम मंचपर।

आँखि मुइन छी मौन किएक हम
जनतब अछि नहि केकरो।

सदा बहार ई रंग मंच अछि
एक अबैत एक जाइत अछि।
बड़ पुरान ई सिलसिला अछि
भू लोकक अमिट कथा अछि।

ई रंग मंचेटा रहत
चलि जाएत सभ रंगकर्मी।

हम आँखि अप्पन खोली
देखी आ परखी सत्यकेँ।
मेटाबी मंचसँ अन्यायकेँ
दुख दोसराक हम बाँटि ली।

पटाक्षेप होएब तँ निश्चिते अछि
आबएबला याद करत ऐ कहानीकेँ। ❑

कामिनी

दन्त अनार केश घन कारी
चोटी भुजंग सन लटकल
गदराएल लौकत यौवन
देहमे अंगिया चिपकल।

आकर्षित बरबस ध्यान
लजाबय चान जेना ओ चमकल।

गोल, कपोल, मुख लालिमा
कानमे कनफुल नाकमे नथिया।
मंगल सूत्र वक्षपर लटकल
बाँहिपर बाजू चिपकल।

कामातुर चतुर सयानि केर
नजैर कतहु छल अँटकल।

नारीक विकसित भालपर
टिमटिमाइत छल रक्तिम टिकुली।
बीचोबीच भाल चमकैत छल
चकमक चकमक बिजुरीक रेखा।

नक्षत्रक अनुपम आभामे
सहस्त्रो तरेगन छपकल।

गजगामिनी ओ भामिनी
आतुर नयन छल कामिनी।
पाय आहट हँसल भभाय
मधुर मधुर रसटपकल।

मेघमे बिजुरीक रेखा
दिगदिगन्त धरि छिटकल। ❑

लकीर

बात ई साँचे जे नै पड़ैत अछि
पानिपर लकीर कखनहुँ
पानि जकाँ बहयबला जे
नै होइत अछि गमगीन कखनहुँ।

नव यौवन ई बहैत पानि
बहि रहल एकरा बहय दिअ।

ई समय एकर नै गम करबाक
धुनि अछि दरियामे उतरबाक एकरा।
कल-कल करैत निनाद एकरा
जीवन-पथपर चलय दिअ।

जुनि रोकू एकरा बहए दिअ
जीवन संगीत सुनाबए दिअ।

रूकि जाएत मरि जाएत ई
रहए दिअ जिन्दा एकरा।
धरतीपर नव जीवनक
इतिहास एकरा रचय दिअ।

नै रंग एकर बेरंग ई
कोनो रंग अइमे घुलय दिअ।

शीशा जकाँ ई उज्जर पानि
सबहक जीवनक रस ई पानि।
धूलकणकेँ संग बहाबए दिअ
रस्ताकेँ गील होअए दिअ।

करैत अछि ई जीवनकेँ अस्त-व्यस्त
जीवनकेँ इएह करैत अछि मस्त। ❑

ओकाइत

तौलल जाइत अछि आंटा
आ चाउर तौलल जाइत अछि।
दूध नापल जाइत अछि आ
नापल जाइत अछि तेल सेहो।

बेटीक बिआहमे बापक
ओकाइत तौलल जाइत अछि।

केहेन चलल ई परम्परा
धन धरतीसँ पैघ भेल।
इनारक सीमित जलसँ
सागरकेँ नापल जाइत अछि।

आइ भौतिक उपादानसँ
माइक ममताकेँ नापल जाइत अछि।

जागू नारी! जागू अहाँ
ओइ पापीपर पहरा लगाउ।
अहीं सृष्टिक मूल छी
अहीं दुर्गा काली अहीं।

अप्पन अलौकिक शक्ति जगाउ
दहेजक दानोकेँ धूल चटाउ।

परिणय तँ प्रेमक बन्हन अछि
जनजनक माथक चानन अछि।
सभ जानि रहल अछि बात
तैयो समाजमे क्रन्दन अछि।

ई समाजक रोग भगाउ
आनन्दक सरिता बहाउ। ❑

बनगी

चानन करए जे माटिक
खुरपी कोदारिक अर्चना।
सभसँ पहिने करैथ ओएह
भारत माताक अर्चना।

धन्य! धन्य!! ओ जिनगी
ओइ जिनगीकेँ बनगी।

करए स्नान पसीनासँ
पछबा प्रचण्ड बिर्रो उद्दंडकेँ
रोकए जे अप्पन सीनासँ

जरैत सूरज छतरी माथपर

धन्य! धन्य!! ओ जिनगी
ओइ जिनगीकेँ बनगी।

जरैत रहैत अछि तन जिनकर
दिन भरि दिनकरक तापसँ
तन कारी दिल साफ जेकर
देशक भक्ति भावसँ।

धन्य! धन्य!! ओ जिनगी
ओइ जिनगीकेँ बनगी।

नहि मात्रहि अप्पन देशकेँ
अछि गौरव सौंसे संसारकेँ।
जेकरा मेहनैत पर टिकल अछि
सौंसे संसारक जिनगी।

धन्य! धन्य!! ओ जिनगी
ओइ जिनगीकेँ बनगी। ❑

मजगूत परत

घटाटोप, बिस्फोटसँ दुनियाँ
सदिखन संसयमे फँसल।
कखनो भारत आ पाकिस्तान
आ कखनो रूस युक्रेन लड़ए।

सभ देश चेताबए, सभ देशकेँ
घोषणा नि:शस्त्रीकरणक करए।
अखबारक पन्नापर देखी
सभ व्यस्त शस्त्र निर्माणमे।

विश्व शान्तिक बात करए सभ
तैयो शस्त्रे निर्माणपर नाज।
झूठे संकल्पपर होएत केना
कहू विश्वकल्याण आइ।

संकल्प करए संसार आइ
करब सुरक्षा पर्यावरणक।
जंगल कटाइ नै रूकि रहल
पर्यावरण सुरक्षित रहत केना।

अणु परमाणुक गर्मी कहू
कहिया धरि धरती सहि सकत?

जागत ई दुनियाँ कहिया धरि
जन-जनक कल्याण हित।

मानव जीवन अवसाद भरल
आनन्द जीवनक घटि रहल
भौतिकताक मजगूत परत
आइ झाँपि रहल मानवताकेँ। ❑

विकल जिनगी

नहि होश छल, बेहोश ओ
अवसाद भरल जिनगी ओकर।
बहि गेल झंझावातमे
एकान्त जा टिक गेल ओ।

सजीव छल ओक्कर काया
मगर चेतनाहीन छल ओ।

रूकि गेल झंझावात
आ काल रात्रिक अन्त भेल।
कायामे जागल चेतना
मनमे बढ़ल उत्तेजना।

जिनगीसँ बिछुड़ल जिनगीकेँ
ओकर चेतना याद करए।

सता रहल छै याद ओकरा
जिनगीसँ बिछुरल जिनगीक।
बेर-बेर कोसए प्रकृतिकेँ
जिनगीसँ बिछुरल ई जिनगी।

केतेक क्रूर ई कुदरत
उन्मादी मशहूर कुदरत।

झेलि रहल अछि आइ ओ
एकान्तवासक यातना।
बेहतर तँ कोनो चतुष्पद
मनुक्खक नरक सन ई जिनगी।

बात करए आसमानसँ
एकल विकल ई जिनगी। ❑

की कसूर अछि

भाषा भलहिं अनेक
मुदा देश अप्पन एक अछि।
प्रजातंत्रक रीढ़ शिक्षा
मगर किएक ने एक अछि।

नशामे ओ अलसल
एमहर जनता कलुषल

धत्ता-पर-धत्ता
देखा रहल ई सत्ता।

गफलतमे जनता
नहि देखि रहल खनता।
काटि रहल सत्ता
जनताक आइ पत्ता।

सत्ता अमीर आइ
जनता गरीब अछि।
सभ सामंतवादी
सत्ताक करीब अछि।

नीके जे लागए नारा
किसान नौजवानक।
खेतिहर मजदूरक
मगर की कसूर अछि? ❑

कहरि

आधार छेलौं, आधार छी
जीवन-मरण पर्यन्त हम
अहींक असली यार छी
परिवार ग्राम ओकि हो शहर
जगकेँ अर्पित हम आठो पहर।

ठहरू! ठहरू!! करू बन्न कहरि
जुनि घोर थालमे आओर जहर
रचलौं समीर मण्डल हमहीं
जगतीकेँ शीतल हवा देलौं
रूकि जाइत सांस संसारक
जरि जाइत दिनकरक तापसँ
हम पिबै छी जग व्याप्त जहर।

ठहरू! ठहरू!! करू बन्न कहरि
जुनि घोरू थालमे आओर जहर।

उत्तर केर आतुर सरितासँ
इठलाइत अबैत ओ तेज लहरि
पैर तरक खिंच जाइत माइट
मचि जाइत प्रलय संसारमे
रक्षित हमरहिसँ गाम शहर

ठहरू! ठहरू!! करू बन्न कहरि
जुनि घोरू थालमे आरो जहर।

पर मूक छी हम देखि कऽ
अन्याय मनुक्खक आठो पहर
जएह भोगैत अछि फल फूल
ओएह करैत अछि कुठाराघात
कए रहल जुल्म हमरापर।

ठहरू! ठहरू!! करू बन्न कहरि
जुनि घोरू थालमे आओर जहर। ❑

शब्द

शब्द-शब्दमे भेद
केतउ प्रण ई केतउ खेद।
विकल प्राणी शब्दक मारल
महाशक्ति ई शब्द।

गाम बान्हिकऽ की होएत?
पहिने बान्हू निज शब्दकेँ।

शब्द स्वर संयमक
शब्द स्वर संचयक।
शब्द स्वर संतोषक
शब्दे अछि स्वर भोगक।

शब्द समस्या, समाधान अछि
शब्द अछि अनमोल ई।

गरल, पियूष ई शब्द अछि,
कारण करूणा हर्ष विषादक।

कहियो कारण विरहक बनैत अछि
कहियो मिलन केर योग ई।

शब्द शक्ति आ भक्ति अछि
ई सहचर संसारमे।

शब्द आशा आ निराशा
शब्द ई साश्वत अछि
शब्द अनश्वर शब्द ईश्वर
महाभारत शब्द अछि।

महाप्रयाणसँ पूर्वहि तनसँ
करए पलायन शब्द ई। ❑

अक्षय पात्र

छोड़ू चिन्ता निज कर्म फलक
बनि कर्मयोगी कर्म करू।
राह कंटकाकीर्ण तैयो
अहाँ सहर्ष संघर्ष करू।

बाधा सभ टलि जाएत
सम्मुख मिठगर फल आएत।

कर्म अछि बटवृक्ष जकाँ
जन-जनकेँ दैत अछि छाँह।

खग, मृग, मानव सभ करैत अछि
विश्राम एक्कर छाँहमे।

थाकल पपीहा चुनमुन कौआ
सभ नीड़ बना कऽ रहैत अछि।

अक्षय पात्रक समान ई
कहियो ने खाली होइत अछि।
कर्त्तव्य बिनु अधिकार कहाँ?
कर्त्तव्येसँ अधिकार अछि।

कर्त्तव्य करू अधिकार मिलत
ईश्वरक अहाँकेँ साथ मिलत।

की होएत काल्हि ई के जानए
ई तँ मात्र विधाता जानए।
केतबो कठिन राह संघर्ष करू
आ अप्पन कर्म सहर्ष करू।

अहींक सिरपर ताज रहत
आ जन-जनसँ सम्मान मिलत। ❑

ई चिन्ता

सौंसे संसार अछि निन्नमे
ई व्याकुल चिन्ता जागि रहल।

ममताक चौखैटपर बैसल
ढारए नोर आँखिसँ ई चिनता।

बन्हगर, कठगर देह ओक्कर
लागए जेना कोनो पट्ठा।

कोन शत्रु आक्रमण केलक
जेकरासँ चिन्ता हारि गेल।
के चोरौलक निन्न ओक्कर
राति-के लजा रहल ई चिन्ता।

प्रकृतिक विरूद्ध ई चालि एक्कर
राति भरि काटए ई चक्कर।

करबाक छल से बहुतो केलक
करिते अछि आइयो धरि ई
अपन तँ काज अधूरे रहलै
दोसराक काजमे झाँकि रहल।

केतबो केलक संतोष नहि
असंतुष्ट चिन्ता कानि रहल।

एकरा अचल सम्पैत छै
तैयो बड़का विप्पैत छै
सात पुस्त केर बात सोचि
लोभसँ ग्रसित चिन्ता कानि रहल।

अत्याचार, भ्रष्टाचारक सोचकेँ
दय रहल प्रश्रय ई चिन्ता। ❑

चिन्ता आ चिन्तन

चिन्ता दुर्बल, चिन्तन सबल
सदैव कर्मक फल प्रबल।
नहि बूझी दुर्भाग्य, बुझी तँ सौभाग्य ई।

कानब, खीजब व्यर्थ अछि
जँ भेटए अकर्मक फल बेजाए।

चिन्ता करैत अछि घुमिल राह
चिन्तन देखाबए राह सबल।
चिन्तासँ अल्पायु मनुक्ख
चिन्तन दीर्घायु बनाबए सदैव।

छीनैत अछि आनन्द चिन्ता
आनन्द मार्ग ई चिन्तन।

अवतरित बहुतो चिन्तक
जन-जनकेँ राह देखौलक।
चिन्ताग्रस्त बहुतो बसुधासँ

समयपूर्व छोड़लक काया।

चिन्तन सुखदायक घनेरो
चिन्ता बजाबए दुख अनेक।

विचलित मन चिन्ता भरल
पहाड़ सन शाश्वत चिन्तन
चिन्तासँ मन खिन्न मनुक्खक
फल-पल प्रसन्नता चिन्तनसँ।

मिल सकैत अछि चिन्तनसँ
जीवनक सुखसार सदैव। ❑

निर्मल धार

जे रक्षक अछि चराचरक
जे जगत सकल गुण खान।
कखनो कमण्डल कखनो लोटा
कखनो घट बनि जाइत अछि।
माटिक पात्रमे ढलि जाइत अछि।

कखनो गिलास, कखनो कटोरा
कखनो झील कखनो तलाब।
कखनो बोतल बनल ई
कखनो बाल्टी बनि जाइत अछि।
धातुज पात्रमे लहराइत अछि।

ओएह जीवन, ओएह यौवन
ओएह नदीमे लहराइत अछि।
प्राण ओएह जनजीवनक
अप्पन मस्तीमे इठलाइत अछि।
अछि सकल श्रृष्टिक आधार ई।

ने रंग ने गन्ध एकरामे
जइ रंग, गन्धमे मिला दिअ।
इएह गंगा, इएह यमुना
जइ ठौरपर रूकि जाइत अछि।
अपरूप ओकरे बनि जाइत अछि।

सरस्वतीक निर्मल धार इएह
तीर्थ त्रिवेणी संगम धरापर।
करैत आएल कल-कल निनाद
भय गेल शान्त सागरमे
जेना पेय जल गागरमे। ❑

सराबोर

हर्षक रंगमे सराबोर
ई फगुआ फागुन मासमे।
देखू रेलमे ठेलमठेला
बस टेम्पूमे धरमधकेला।

मुन्ना-मुन्नी केहेन जोगारी
रंग खरीदलक पीयर कारी।
मुखरा किनलक बाघ शेरक
मामा संग बाजारमे।

अप्पन मीत संग हलसल फुलसल
मुन्ना आएल मामा गाम
लागल देखाबए जेठका मामाकेँ
जे बैसल रहैथ दलानमे।

मामा कहलैन सुन रौ बौआ
रंगमे भंग नै करिहेँ बौआ।
नीक जकाँ तूँ खेलिहेँ फगुआ
अप्पन नानीक गाममे।

सभ मस्त छल होलीक रंगमे
मुन्नापर नहि ध्यान देलक।
भिजले रहि गेल कपड़ा ओक्कर
साँझो साँझ रंग खेलिते रहल।

ध्यान गेल माइक मुन्नापर
बेहोश बिछाओनपर पड़ल छल।
देह गरम छल आगि जकाँ
भुकुर-भुकुर ओ कनैत छल। ❑

विश्वकर्मा सन्तान

की तकै छी टुकुर-टुकुर!
की तकै छी मुलुर-मुलुर!
टुकड़ामे बँटल छी अहाँ
तँए तकै छी टुकुर-टुकुर।

तँए मुर्दा बनल छी
मुलुर-मुलुर तकै छी।

नौजवान उर्जावान छी
अहीं देशक शान छी।
अनाधिकार चेष्टा नहि
अप्पन अधिकारहित लड़ू।

अहीं श्रोता, अहीं दर्शक आदिसँ
की सभ दिन दर्शके आ श्रोते रहब?

कहू तँ कोन निर्माण एहेन
जाहिमे अहाँक योगदान नहि।
सभ दिनसँ योगदान रहल आ
योगदान अछि आइयो सभ निर्माणमे।

तैयो सभ दिनसँ बंचिते रहलौं
आ बंचित छी आइयो अहाँ।

हे विश्वकर्मा केर सन्तान, जागू अहाँ!
खोलू आँखि फड़फड़ाउ पाँखि।
अप्पन चट्टानी एकतासँ
मर्दन करू ओइ शोषक वर्गक।

उठाउ मशाल बढ़ू आगू!
कदमसँ कदम मिलाकऽ
शोषक वर्गक तोड़ू मिजाज। ❑

प्रतिबन्धित आजादी

केतए चलल नेंगराइत देखू!
आँखिसँ नोर ढारैत देखू।
धँसल आँखि झुर्री मुखारपर
व्यथित कुटिलताक भावनासँ।

बहुजनक अवमाननासँ
आत्म ग्लानिसँ जड़ैत देखू।

सिद्धान्तमे नै भेद कोनो
ओ बिसैर गेल सिद्धान्तकेँ
भेद-भावसँ ओ ग्रसित
निज श्रेष्ठताक भाव मनमे।

कए रहल अधिकार हनन
जन-जनक शोषण करैत देखू।

नहि समस्या उत्पादनक ई
अछि समस्या वितरणक ई।
समानताक सिद्धान्त जेकर छल
बन्धुत्व भाव आदर्श जेकर छल।

बिसैर गेल आदर्शकेँ ओ
भाई-भाईमे लड़ैत देखू।

खण्डित भऽ गेल आजादी
बंचित गरीब सभ दण्डित भेल।
सर्वत्र परिलक्षित विषमता
भोजन, वस्त्र आवासमे।

चलल रप्तारसँ आगू-आगू
आजादी प्रतिबन्धित देखू।

नहि आदर जनभावनाक
निजता चढ़ल कपारपर।
बलात्कार भ्रष्टाचार आइ
झकझोड़ि रहल जन-जीवनकेँ।

पाछू पड़ल समाजवाद
सामन्तवाद आगू-आगू देखू। ❑

कचोटल मन

चंचल अछि, नै स्थिर कखनो
ओक्कर कचोटल मन ई।
गेह चतुर्दिक, मेह चतुर्दिक
चित्त चंचल चकुआ रहल।
दबल समस्याक बोझसँ
लदाएले जा रहल जिनगी ओकर
झुग्गीमे छपकल निष्ठा
अनिष्ठाशीश महलमे पलि रहल।

बाध-बोन आ चर-चाँचरमे
गाबए देशक गान ई।
करए दिखाबा मंचहिपर
अप्पन बघारय शान ओ।

देशक चिन्ता सता रहल छै
एकरा अप्पन पर्णकुटीमे।
महलमे ओकरा सता रहल छै
पीढ़ी-दर-पीढ़ीक चिन्ता। ❑

चिनगारी

होएत घुमिल सभ राह
होएत तबाह ई दुनियाँ।
जहिया कलम रूकि जाएत
ताण्डव होएत अन्यायक।

नहि ढाल कोनो रहि जाएत
इंसानक रक्षार्थ तखन।

जँ कलम पिछलग्गू बनत
सभ मेटा जाएत इंसानियत।
घुटि-घुटिकऽ इंसान मरत
ई जिनगी रसहीन होएत।

करत तखन सामन्तवादी
अप्पन-अप्पन मनमानी।

कानन रसक मुरझाएत
जइ दिन कलम रूकि जाएत।
रसिक कैँ श्रृंगार रस
रण बांकुर कैँ वीर रस।

कहू गाबिकऽ के सुनाएत
चिनगारी के जगाएत।

कलम जिगर छूबैबला
देखि सकए जे दूर धरि।
दुर्दान्त नुकाएल जे काननमे
कहू ओकरा के ललकारत?

घनघोर तिमिरमे कहू के
आभा नवल बिखराएत।

जागू कलमक वीर अहाँ
भू-भागक रण धीर अहाँ
पिछलग्गू नै निर्मम सत्ताक
जनमानसक हित लग्गू बनू।

बनाउ चिनगारी कलम के
अन्याय के जरा कऽ राख करू। ❑

साधना

इहलोक ओएह, परलोक ओएह
जन-जीवनक आलोक ओएह।
समस्त चेतन संसार ओएह
भग्वद् गीताक सार ओएह।

ओ साधना केतेक पैघ?
सभसँ पैघ ओ साधना।

जे हर्षसँ स्वीकार करए
सबहक हाथसँ श्रद्धा सुमन।
साधकक लेल ने किछु बाधक
ओ सभसँ पैघ अराधना।

ओ साधना केतेक पैघ?
सभसँ पैघ ओ साधना।

साधक महा एकलव्य छल
जग शूद्र कहै छल जेकरा।
केलक चकित संसारकेँ
साकार भेल जँ साधना।

ओ साधना केतेक पैघ?
सभसँ पैघ ओ साधना।

बिना तारक तार ओएह
जगसँ करबाबए बात ओएह
जीव श्रेष्ठ जग मानवकेँ
नभमे टहलाबए साधना।

ओ साधना केतेक पैघ?
सभसँ पैघ ओ साधना।

गिरलकेँ सभ दिन ओएह उठाबए
मूरत केर करतब सिखाबए।

ठाढ़ चानपर उतारि मनुजकेँ
मुसैक रहल ई साधना।

ई साधना केतेक पैघ?
सभसँ पैघ ई साधना। ❑

गाँठ

दिलमे दिल नै झाँकि सकल
आ वेदना नै जानि सकल।
कायिक हरकत देखितो
केलक ओकर अवहेलना।

मोनमे पोषल अहंकारवश
नै जनलक स्वर संवेदना।

जे सुनलक वक्ता कहलक नहि
जे कहलक श्रोता सुनलक नहि
उठल उत्तेजना दूधक उफान जकाँ
उभय पक्ष केर अन्तर मनमे।

रिपुदलक मोन उल्लास भरल
ओ कामयाव भेल साजिसमे।

कमजोर भेल रिस्ता दुनूक
लागल बढ़ए दूरी तखन।

टुटि गेल कमजोर डोरा
बन्हाएल छल जइसँ दुनू।

दुनूक दिलमे गाँठ बनल
जागत केना सम्वेदना।

नहि रहल मित्र जे मित्र छल
मेटा गेल भाव जे छल बन्धुत्वक
अप्पन बनि गेल आन तखन
उभय दिल पाथर बनल।

दुनू विपरीत धेलक राह
आ एक-दोसरपर अकड़ल। ❑

मनुक्खक जिनगी

क्षणे-क्षणे नवीन होइत
कखनो एतए कखनो ओतए।
नीक आ बेजाए होइत
कखनो हँसैत, कनैत कखनो।

उथल-पुथल केर सिल-सिलासँ
भरल मनुक्खक ई जिनगी।

कखनो जीत, कखनो हार
कखनो लूटए बहार।

कखनो झेलए तकरार
रणक्षेत्र बनल जिनगी मनुक्खक।

सुखक, दुखक ई खिस्सा
मनुक्खक ई जिनगी।

कखनो घृणा, कखनो प्यार
आशा कखनो, निराशा कखनो।
कखनो फेल कखनो पास
पथपर कुहाशा कखनो।

सदिखन टिकल उम्मीदपर
मनुक्खक ई जिनगी।

कखनो प्रबल इंसानियत
कखनो प्रबल हैवानियत।
कखनो प्रभावित साँच-झूठसँ
मनुक्खक ई जिनगी।

सुखक दुखक प्रभावसँ हलसल आ
कलुसल मनुक्खक ई जिनगी। ❑

आकृति

जेकरासँ दूरी रखै छी
ओ अनुपम आकृति अहींक।
ढाँचा एक साँचा अनेक
सभ एक्के हाड़-माउसक काया।

एक्के सबहक भूख-प्यास
आ सुख-दुखक सम्वेदना।

भुखल सिनेहक, ओहो ओहिना
जहिना भुखल सिनेहक अहाँ।
भावनाक अछि ताड़ जुड़ल
अहीं जकाँ ओकरो कायामे।

रूधिर संचरित एक सबहिमे
कियो गोर आ कियो कारी।

परोपकार, प्रेम आ न्याय
मनुक्खक अनुपम पूजी।
भलहिं समूहमे बँटल मनुक्ख
अछि तीन सूत्रमे बान्हल।
जखने ई बन्हन शिथिल भेल
बढ़ि गेल मनुक्खमे भेद-भाव।

देखब विवेक सभ प्राणीमे
मनुक्ख तँ विवेकशील अछि।
पड़ि रहल भाड़ी स्वार्थ परायणता
मनुक्खक विवेक शीलतापर।

तँए मनुक्खक जीव श्रेष्ठतापर
लागि रहल अछि प्रश्नचिन्ह।

जातिक बन्धनसँ लाउ ऊपर
मनुक्खक जीव श्रेष्ठताकेँ।
जोड़ि मनुक्खकेँ मनुक्खसँ
हटाउ कटुता आ बढ़ाउ बन्धुता।

छोड़ू कृतघ्नता कृतज्ञता प्रकट करू
ई मनुक्खक नैसर्गिक गुण अछि। ❑

तालमेल

चारूकात सँ घेराएल काकसँ
सांसतमे अछि ओक्कर जान।
छोड़ि ओ उल्लूक सवारी
अत्याचारीक घर नुका रहल।

विवेकहीन ई लक्ष्मी
केहेन ओकर ई चालि।

देखि अकिंचनकेँ पथपर
पथ बदैल लेलक मुँह मोड़ि चलल।
लागल छल जेतए कदइ
ओ सिर झुका कऽ बैस गेल।

नै सुझाइत अछि राह ओकरा
रहए गोबर गोंतमे ओ।

दिन रतौन्ही भेल छै ओकरा
रातुक प्रतीक्षा कए रहल ओ।
डर लगैछ दिनमे ओकरा
कारी कौआक जमातसँ।

जखने आएत कारी कौआ
नोचि-नोचि ओकरा खाएत।

बैसल सुरक्षित सरस्वती
दिनक निर्मल इजोतमे।
होइत किएक सम्मुख ओकर
ओकरा छल डर इजोतमे।

दुनू बहिन विपरीत दिशामे
मुद्दतिसँ बिगड़ल तालमेल। ❑

एक कप चाह

एक कप चाह हमरो दिअ
जँ साँझक पाइ बिहान ली।
मात्रा भलहिं थोड़ होअए
चाह दुधगर, मिठगर चाही।

पिनैक उठल दोकानदार
आ मुँह अईंठ कऽ बाजल।

सभ दिन खेलौं बसिया भात
तँए करै छी उधारीक आश।
हमरा बसिया खेबाक आदैत नहि
रख मजूरी चोखा काज।

बात चहटगर खाली जेब
हम उधार किन्नौ ने देब।

चाह पीबी उधारी आ
खैनी लेल भीखमंगी करी।
अपनहि धरि राखू ई आदैत
हमरा ई आदैत नहि लगाउ।

पीबिते काल रहैत अछि ध्यान
अहाँक ने कहियो साँझ-बिहान। ❑

शून्य मनसँ

शून्य मनसँ की कहू
शून्य मनकेँ आइ हमा।
धिक्कार अछि नहि जानी हम
खग रहितो खग केर भाषा।

आँखि मुनि बैसल सरकार
पाल्याकेँ लूटि रहल पालक।
अछि मानवता शर्मसार आइ
मेटाएल जा रहल न्याय धरासँ।

बौक बनल देखैत रहत
अन्याय कहिया धरि जनता।
लुटाइत रहत माइक ममता
कहिया धरि अन्यायीक हाथसँ।

बाँचल नहि किछु सभटा लूटा गेल
हम की देखू ओइ शून्यकेँ।
चारूकात सँ चीख पुकारक
आवाज शोषणक आबि रहल।

जाधैर नहि जागत गरीब
छात्र-नौजवान चुप्पी सधने रहत।
अहिना धह-धह जरैत रहत
ममतामयी माइक आँचर एतए। ❑

पिछलग्गू

बाजै छी साँच
मुदा बात लड़खराइए
मुँह देखि मुंगवा
आइयो बिकाइए।

आब जनसाधारणक
बात जुनि पुछू
नीक-नीक मुँहकानबला
बेसीए धखाइए।

बीतल चौहत्तैर साल
पचहत्तैर चढ़ल कपारपर
तैयो ई अकुलाहट किएक
साँच बजबामे
की इएह! इएह अछि आजादी?

झुठिया रहल अछि सीना तानि
आइयो अहाँकेँ ओ फरेबी
आ अहाँ टुकुर-टुकुर तकै छी
कहू तँ लड़ब केना अन्यायसँ?

उठाउ मशाल हाथमे
जगाउ आइ जन-जनकेँ

सत्यक समर्थनमे
होएत असत्य परास्त तखने
जँ अटल रही निज लक्ष्यमे।

सत्ये न्यायक आधार थिक
पूण्यक इएह आधार थिक
नै बनू पिछलग्गू अन्यायक
न्यायक मार्ग प्रसस्त करू। ❑

कर्म पथ

कर्म पथसँ गिरल मनुक्ख
सर्वत्र विवश भऽ जाइत अछि
अपनोक सहैत अछि चोट
आन तँ सहजे आने छी।

अनुकूल समय ओ छल पटौने
परिवारकेँ अप्पन खून-पसेनासँ
विपरीत समय सभ बिसैर गेल
ओ पुष्पित भेल केतएसँ।

ओकर कृतघ्नताक कठाइन स्वर
हिनका गड़ैत अछि काँट जकाँ
भार बुझि पड़ै छैन आब स्वजनकेँ
पल-पल करै छैन अवहेलना।

उपजल विचारक शृंखला
मोनमे हिनका तखन
प्रतिकार कऽ सकता केना
पछताइथ पाछू ताकि-ताकि।

देखि पर-उपकार पाछू
होअए संतोष मनुक्खकेँ
देखिते अपकार पाछू
आत्मग्लानिसँ मरए मनुक्ख। ❑

तीन वरदान

बच्चाक शिक्षक किशोर बाबू
सभ दिन बाजथि एक्के बात।
ब्रह्म मुहूर्त्तमे जागू बौआ
मानू हम्मर ई बात।

ब्रह्म मुहूर्त्तमे बाँटै छथि
भगवान तीन वरदान।
स्वस्थ रहब, धनवान बनब
आ पाएब उत्तम ज्ञान।

ध्यान लगाकऽ सूनए गुड़िया
सभ दिन हुनकर बात ई।

देरी भेलापर जोहैत रहै छलि
अप्पन शिक्षकक ओ बाट।

वर्षक अन्तमे भेल परीक्षा
जँचाएल औसत उपस्थिति सेहो।
सभसँ ऊपर छेली गुड़िया रानी
सभसँ बेहतर सभ स्थितिमे।

हलसल-फुलसल छेली गुड़िया
छल गर्व ओकरा अपन शिक्षकपर।
भेली पुरस्कृत गुड़िया रानी
सबहक सम्मुख मंचपर। ❑

चिल्होरिया

उड़ए चिल्होरिया आसमानमे
कारी खट-खट ओक्कर पाँखि।
एकक पाछू एक उड़ैत अछि
अनुशासित असमानमे।

ई चिल्होरिया बड़ निडर
लागए ने एकरा कनियों डर।

सेर भरिक रेहु अनलनि
काका अप्पन पोखैरसँ

मारि झपट्टा छीन माछ ओ
भागल उड़ि असमानमे।

हमर गुलेती छूबि ने सकलै
पाछूए रहल असमानमे।

तहिना लऽ कऽ भागल कौआ
रोटी बौआक हाथसँ।
भोरेसँ कानि रहल बौआ
करिया कौआक डरसँ।

कदम गाछपर ओक्कर खोंता
आइ उजारब ओक्कर खोंता।

दादी पोसलक हरियर सुग्गा
पोसब हम चिल्होरिया कारी।
भागले रहत ओकरा डरसँ
छान्हीपर बैसल कौआ।

खुशीसँ बौआ नाचत अँगना
हँसि-हँसि रोटी खाएत। ❑

फूल वरसाबथि

ऊँच कैलासपर
शिवजीक आवासपर
साँप फुफकार काटए
बसहा इकार करए
डमरू बजाकऽ
तिरसुल नचाकऽ
भाँगबला झोराकेँ
केतौ नुका कऽ
शंकरजी नाचथि
गौड़ी नचाबथि।

हर्षित भवानी
जन कल्याणी।
गौड़ीक आनिपर
नाचथि मशानी
चाँद चकाचौंध करए
गंगा हिलोर मारए
तुरही बजाकऽ
लटछिटका कऽ
शंकरजी नाचथि
गौड़ी नचाबथि।

दर्शक अधीर भेल
स्वर्गहुमे भीड़ भेल
ध्यानमे मगन छथि
वीणा भुला कऽ
हर्षित श्री नारदजी
शोभा निहारैथ
युग-युगसँ संचित
पूण्यकेँ भजाबथि।
जंकरजी नाचथि
गौड़ी नचाबथि।

विष्णु एला गरूर चढ़ि
चक्रकेँ भुला कऽ
गद-गद ओ ब्रह्माकेँ
संगहि लगाकऽ
सुर, नर, मुनिकेँ
मोन हरसाबथि
भरि-भरि आँजुरमे
फूल बरसाबथि।
शंकरजी नाचथि
गौड़ी नचाबथि। ❑

पीढ़ी-दर-पीढ़ी

मुश्किल अछि सुइख जाएब
धरापर पूर्णत: द्वेषांकुरक
पलैत रहैत अछि जे निरन्तर
खूनहिसँ खूनमे
पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

बदलैत रहैत अछि ई निरन्तर
दोस्तियोकेँ दुश्मनीमे
मधुर सिनेह संवादो तखन
साजिसे सन लगैत अछि
पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

सहितो असह्य पीड़ा
नहि रूकि पबैत अछि प्रवाह सिनेहक
पलैत रहैत अछि ईहो निरन्तर
खूनहिसँ खूनमे
पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

रखैत अछि अल्पंतर
ओ विष जीवसँ
मुदा नै मरैत अछि इंसानियत
बहैत रहैत अछि ओहो निरन्तर

खूनहिसँ खूनमे
पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी। ❑

पहिले बम गिराय हम

कहलक बेंग बनब हम सेना
करब यतनसँ देशक सेवा।
देशभक्त कहाएब हम
हमरा देशपर वार करत के।
हम केकरोसँ की कम
पहिले बम गिराएब हम।

करब अभ्यास जरूरी बुझलक
पर असगर सम्भव नहि बुझलक।
अभ्यासीक एक टीम बनौलक
टीमक एक सरदार बनौलक।
अभ्यासी सभ बम्मक बम
पहिले बम्म गिराएब हम।

सभ दिन भोरे सभ उठै छल
मीलक मील ओ दौड़ लगबै छल।
एकसँ बढ़िकऽ धावक एक
अभ्यासीक संख्या बढ़ि गेल।
देखबए सभ अप्पन दमखम
पहिले बम गिराएब हम।

आएल अषाढ़ जल जकथक भेल
सभ बेंगक मन हर्षित भेल।
डाबरमे गिरल सभ एकाएक
कों कँए-कों कँए स्वर गुंजित भेल।
डाबरमे देखाबए सभ अप्पन दम
पहिले बम गिराएब हम। ❑

मतारी

चिन्हलें रूपैआ पैसा गे माए
चिन्हलें गहना जेबर गे।
हमरा जँ नै चिन्हलें गे माए
हम हेबौ मइटुग्गर गे।
हमहीं तोहर भड़ल बखारी
हमरा चीन्ह गे मतारी।

सपनासँ भरल आँखि हम्मर
आँखि खोलि तूँ देखि ले माए।
मेटा देबौ हम सभ मजबूरी
सबल हेतौ जिनगीक धूरी
बुझ नहि अपनाकेँ दुखियारी
हमरा चीन्ह गे मतारी।

नहि छीन हमर अधिकार कोनो
तोरे जिगर केर फूल हम
फूल बिछाएब राहमे तोहर
चरणपर झुका देबौ हम स्वर्ग गे।
पर सभ शक्ति भेटत तोरेसँ
हमरा चीन्ह गे मतारी।

तोरे खूनसँ पलल बढ़ल
हम तोरे सन्तान गे माए।
स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन
सभ हक के अधिकारी।
अप्पन हकक रक्षार्थ दे
आशीष गे मतारी। ❑

हम्मर मामी

दूध पिया कऽ मरल मतारी
आँगुर धरा कऽ बाबूजी।
हम छी एकलौता माइक
ने बहिन आ ने दीदी।

पढ़ल-लिखल मामी छेली
ओ हमरा ननिहालमे।

बाबूक श्राद्ध भऽ गेलापर
मामा अनलैन हमरा अप्पन गाम।
नै छल ज्ञान ममियौतक हमरा
मुदा छेलौं संगतुरिया।
ढेरवाऊँसँ हम अप्पन मामीकेँ
सभ दिन माए कहैत रहलौं।

हुनका सभक माए आकि
हम्मर माए थिकीह से नै कहियो
भऽ सकल आभास हमरा
मुदा हमहीं बेसी रहलौं मामी लग।

तँए कोनो नीक निकुत पहिने
हमरे हाथ लगै छल।

माघ मास मामी हम्मर
भरि कटोरी साग-भात
आगूमे दऽ दइ छेली आ
ओ दुनू भुखले चलि जाइ छल
ओ दुनू बड़ टिपौरी छल
आ तँए पातर लकलक छल।

टपैक पड़ैत अछि नोर आँखिसँ
मोन पड़ै छथि मामी जखने
नै रहली आब हमर मामी

ओ आँखि मुइन संसारसँ विदा भऽ गेली।

ओ मामी नहि साक्षात् भगवती छेली।
हम्मर मामी! हम्मर मामी!! हम्मर मामी!!! ❑

दादीसँ

करैत इशारा आँगुरसँ
बाजल मुनियाँ दादीसँ।
कोन कारणेँ भुखले पियासले
खोंतामे बैसल चिड़इ।

खोंतामे अण्डा छै ओक्कर
बजली दादी मुनियाँसँ।
जाधैर चूजा नहि निकलत
अहिना बैसल रहत चिड़इ।

निकलल खोंतासँ चिड़इ
किछुए दिनक पछाइत।
मुँह बौने चूजा ओक्कर
पाछू-पाछू निकलल।

चीं-चीं करैत उड़ैत चिड़इ
ई केकरा बजा रहल छै?
चुग्गा नेने चोंचमे ओ
चुग्गा केकरा खुआ रहल छै?

फुदैक-फुदैक पाछू चलै छै
मुँह बौने ओ चुनमुन।
चीं-चीं करैत चिड़ै ओ
चुग्गा ओकरे खुआ रहल छै।

कोन कारणेँ चिड़िया रानी
मारए चोंचसँ चुनमुनकेँ।
बता दे हमरा कोन कारणेँ
बिगैड़ गेलै चिड़िया रानी।

पंख सबल भेल चुनमुनक
नहि रहल आब दुर्बल ओ।
विचरण करए उन्मुक्त गगनमे
चिड़िया रानी सिखा रहल चुनमुनकेँ। ❑

चारपर कौआ

अप्पन इसकुलसँ पढ़ि कऽ
अबै छल दूटा चटिया
थाकल छल छोटका चटिया
तँए बाटेमे बैस गेल।

समय किछु बेसी भऽ गेल छल
व्यर्थ नहि बिताएब से सोचलक बड़का

मुदा एकरा छोड़ि तँ जा नै सकै छी
से सोचि केलक एकटा उपाय।

चारपर इशारा करैत ओ बाजल-
बौआ रे बौआ! चारपर कौआ!!
सबटा कौआ कारी
चकमक माइक साड़ी।

चट्टे उठिकऽ कहलक छोटका
भैया रे भैया बहुतो कौआ
चकमक-चकमक मोती
उज्जर बाबूक धोती।

चल रौ बौआ चल झटपट
बुन्द पड़ै छौ टपटप, टप
चारि दू के दूना
कीनि देबौ झुनझुना।

खाली भऽ गेल हम्मर पेट
चलल ने जाइत अछि एक्को डेग
अप्पन घर छौ बहुते दूर
कीनि दे रे भैया अंगूर।

एक्केटा टॉफीपर कऽ ले सवूर
आगू कीनि देबौ अंगूर।
गामसँ एतउ नानी

कलमक सूनब कहानी।

छोटका गिरल तराइ भटका
बड़का सोचलक लागल खटका
उलटा-पुलटा कहत माएकेँ
टुटत पीठपर मोटका सटका।

तँए ओ कहलक-
राह बनल छौ बड़ छिछलाह
सम्हैर कऽ चलिहेँ अप्पन राह।
चकमक चकमक चानी
नै खेलिहेँ घो-घो रानी। ❑

तित्तिर रानी

सागर नामक एक किसान छल
ओक्कर बेटी तित्तिर रानी।
लड़कीमे छल गुण अनेक
सुन्नैर ओ लाखोंमे एक।

मगर पढ़ाइसँ दुश्मनी छल
चिन्तित छल माए-बाप ओक्कर।

बजली माए एक दिन तित्तिरसँ
पढ़ै-लिखैक तोहर उमेर छौ।
बात किए ने सुनै छेँ तों

अनपढ़ रहि जेमें गे बेटी।

नहि पढ़बें तँ अनपढ़ रहि तों
जीवन भरि पछतेमे।

तित्तिर गूथि रहल छली माटि
मनहि मन गुनगुना रहल छली।
हम्मर पढ़ाइ आब भेल खतम
आगू नै हम पढ़बौ गे माए।

हिन्दी सरल पढ़ि-लिखि लइ छी हम
साए धरि गिनती कऽ लइ छी।

हमरा रंग दिया दे गे माए
आओर दिया दे तूलिका।
नीक-नीक हम मूर्त्ति बनाएब
ओइमे रंग भरब गे माए।

भारत माताक हम मूर्ति बनाएब
हाथ तिरंगा झण्डा गे माए। ❑

गमगीन

पुलकित कखनो
विचलित कखनो।
बहैत जल ई जिनगी।

लड़ैत झंझावातसँ
रफ्तारमे ई जिनगी।

लय अछि, धुन अछि
अइ बहैत जलमे।
टकराइत जंगल पहाड़सँ।

झीलक गहराइ धरि
गमन करैत अछि ई जिनगी।

मस्तीमे बहिते जा रहल
जे छूटि गेल से छूटि गेल
नै ताकए पाछू ई जिनगी।

पल-पल मिलनक आस मनमे
नै भूलि सकल छूटल जिनगी।

मझधारसँ उतरल पार
करए एहसास जीतक।
जोहए वाट राहमे छूटल जिनगीक।

संग मनाबए विजय दिवस
जीतक आनन्द दूना जिनगीक।

होइतो रणक विजेता ई
ठहैर जाइत अछि एकान्तमे
बिछुड़लसँ मिलनक आसमे
गमगीन रहै अछि ई जिनगी। ❑

बीनल जाल

शैतानक चुइयाँ लाल-लाल
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।
आइयो फँसल बहुजन समाज
शैतानक बीनल जाल-जालमे।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

हरए इजोत आ गढ़ए अन्हार
चोराबए समता सनक मोतीक हार।
महाकपट केर जाल बिछाबए
देखू ई देशक घाट-बाटमे
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

नाम अमृतलाल बगलमे
लटकए जहर केर पोटरी।

कियो मरौ आ गरौ गराँतमे
अप्पन भरए ओ पोटरी।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

बेइमान बजाबए गाल
बहाबए अपने दिस ओ धार।
मनुक्ख-मनुक्खक बीच आइयो
लगा रहल ओ टाट-टाट।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

ओकरे भात, भतारो ओकरे
झूठ-मूठ ललकारो ओकरे।
दिन-राति खटए भण्डार भरए
ओकरे भगाबए कात-कात।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

जन-जनक आहार जुटाबितो
दुतकारल छल जे मुद्दैतसँ।
जी-तोड़ मेहनैत कए रहल
उठबाक लेल जे सूतल छल।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल।

देशमे पसरल परजीवी
जे डुमल, अत्याचार, भ्रष्टाचारमे।
टपि रहल सीमा कृतघ्नताक

ओक्कर दुखाइत अछि माथ-माथ।
इंसानक बिगड़ए भाल-भाल। ❑

सर्वोत्तम ऐना

ढीठ नेन्ना, भीठ खेत
दुनूक मालिक रहैथ सचेत
लापरवाहक बिगड़ल नेन्ना
टाँट होइत भीठ खेत।

सुधरत केना बिगड़ल नेन्ना
रोपब केना हम भीठ खेत।

नेन्ना नहि मानत बात कोनो
कहब बौआ बुड़बक भऽ गेल।
चलत ने कनियों हँसुआ-खुरपी
दुखाएत कब्जा आ टुटत बेंट।

जिनकर नेन्ना, जिनकर खेत
समयसँ पहिने होथु सचेत।

नेन्नाकेँ नेन्ना बुझौथ
सोभाव ओकर अछि खेलब।

भीठ खेतक दोष कोन
जँ नहि समयसँ देखब।

जेहने दुलारू नेन्ना
तेहने दुलारू भीठ खेत।

साफ अयन अप्पन राखू
स्वच्छ जलसनक पारदर्शी
माए-बाबूक आचरण
नेन्नाक सर्वोत्तम ऐना अछि। ❑

बिढ़नीक छत्ता

सोनूक घरक पछुऐतमे
बिढ़नीक छल एक पैघ छत्ता।
आवाजाही नहि केकरो ओम्हर
बुढ़, जवान आ बच्चा
मुदा मुरारी बड़ अगत्ती
अकैड़-अकैड़ ओ जाइ छल।

नमहर रोड़ा उठा कऽ मारलक
ओ बिढ़नीक छत्तापर।
सैंकड़ो बिढ़नी उड़ल साथमे
पाछू केलक मुरारीकेँ।

बाप-बाप चिकरल मुरारी
देह ओकर भेल पीयर-ढाबुस।

ओ दर्दे कुहरए लागल
जीयब भेल दुसवार ओकर
अस्पताल लऽ गेल सभ ओकरा
हपतो इलाज करबौलक।
मगर मुरारी बाँचि सकल नहि
नाहँक ओ प्राण गामौलक।

बौआ अहाँ अनुशासन सीखू
जुनि सीखू एहेन अल्हड़पन।
नहि तँ असमय जा सकैत अछि
बहुमूल्य अहाँक ई जीवन।
नहि तंग करू लघु जीव-जन्तुकेँ
बुझू अपनहि सन ओकरो जिनगी। ❑

धनेशक बिआह

धूम मचल अछि जंगलमे
कोयल गाबए मंगल गीत
मनमोहक अछि मोरक नाच
ऊँच अछि तित्तिरक तान।

दर्शकजनक अछि लागल भीड़
सुनए बटेर लगाकऽ ध्यान।

दर्शकजन सभ मंत्रमुग्ध छल
सुनि राग मोहिनी बुलबुलक।
चहैक रहल दर्जिन चिड़ै
काठ खोदैत कठखोदबा।

याद सताबए चुनमुनक
हेराएल भीड़मे कचबचिया।

वाद्य धमाधम सुनलक बत्तखी
करए लागल ओ क्वेक-क्वेक
छोड़ि जलाशय ऊपर आएल
चिड़ै सभसँ बढ़ौलक मेल।

बनल चिड़ैयक नमहर पाँती
अनमन ठाढ़ जक्शनपर रेल

राह देखाबए मिट्ठू तोंता
सारस गाड़ी चला रहल
सजि-धजि बैसल दुल्हा धनेश
सबहक मन ओ मोहि रहल।

आइ धनेशक बिआहमे
सभ चिड़ै बरियात चलल। ❑

गुदगुदी

उड़ए अकाशमे ओक्कर गुड्डी
देखि लागए हमरा गुदगुद्दी।
एकरा कटलक, ओकरा कटलक
भेल नजैरसँ ओझल गुड्डी।

एहने रहैत जँ हमरो गुड्डी
लगबैत सभकेँ ओ गुदगुद्दी।

फेरो औते गुड्डी मेला
मेलामे रहतै ठेलम-ठेला
हमहूँ जाएब गुड्डी गाछी
साथे रहत हम्मर सभ साथी।

गुड्डी रहतै सभसँ नीक
नोचि पड़ाएत सबहक टीक।

लवका सूतमे मोम लगाकऽ
मजगुत हम बनाएब ओकरा।
सभ गुड्डीकेँ काटि गिराएत
सभसँ ऊपर हम्मर गुड्डी।

देखिते मातर हम्मर गुड्डी
लागत सभकेँ खुदबुद्दी।

कक्कर गुड्डी बढ़ियाँ गुड्डी
भीड़ पूछत ओइ भीड़सँ
गुड्डी उड़त अकाशमे
आ डोरा हमरे हाथमे।

मन ललचाएत सभकेँ गुड्डी
सभसँ बढ़ियाँ हम्मर गुड्डी। ❑

अतीतक कहबी

दादी आ नानीक ई
निराधार नहि कहबी।
आधारित सच्चाइपर
दादी नानीक ई कहबी।

जेकरे मूरे मूर
तेकरे मारी तीन हूर।

भोजन, वस्त्र आवास मुहैया
अतीतसँ करए जे संसारकेँ
ओएह बंचित आइ धरि
भोजन, वस्त्र, आवाससँ।

सभ खीर गोसाँइ घर
भण्डार घर बिलकुल खाली।

जे जमीन जोतए कोरए
नहि एक्को धूर जमीन ओकरा।
कोरए ने माटि सुखाबए पाँखि
बिग्घाक बिग्घा जमीन तेकरा।

बीनल अदौसँ मकड़जाल
तँए बिगड़ल जाइछ देशक हाल।

टूटत केना ई मकड़जाल
हालत देशक सुधरत केना।
जएह बसौलक शहर दिल्ली
ओकरे लेल अछि दूर दिल्ली।

जे शिक्षा बन्धन काटएबला
ओकरेपर लागल ग्रहण आइ।

दादी आ नानीक ई
निराधार नै कहबी।
आधारित सच्चाइपर
दादी, नानीक ई कहबी।

जेकरे हाथ डोई
सएह सभ कोई। ❑

सभसँ बढ़ियाँ खेल ई

जे कागजपर उगलए मोती
नै जल पीबए खाए ने रोटी
पढ़ब-लिखब सिखाबए सभकेँ
बढ़बए सभसँ मेल ई।
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई।

ओइ मोती सन हमहूँ लिखी
पढ़ब-लिखब सीखी हमहूँ
सभ अक्षर पहचानी हमहूँ
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई।

इएह जगाबए सबहक आशा
सभसँ मिठगर अप्पन भाषा
जखन संगोरमे जाइ हम इसकुल
लागए अनमन रेल ई।
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई।

इसकुलमे अनुशासन सीखी
सभसँ बात करब हम सीखी
अप्पन भाग्य हम अपने लिखी
भेटए हमरा सीख ई।
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई।

माए-बाबूक सेवा करब
समयसँ सूतब जागब सीखी
अपनो हँसी हँसाएब सीखी
सीखी सभटा खेल ई।
सभसँ बढ़ियाँ खेल ई। ❑

बौआ

बौआ बाजए ओकरे सन
बाप, मतारी, भैया सन।
करए आचरण ओहने बौआ
खेलए जेकरा संग तेकरा सन।

राम, कृष्ण, रहमान ओ कखनो
कखनो यीसू मसीह सन।
सभ धर्मक आभा बौआमे
कखनो राजा आ मंत्री सन।

कखनो चूहा-बिल्ली खेलए
कखनो चोर-सिपाही सन।
कखनो पाठ पढ़ाबए सभकेँ
चटियाकेँ पढ़बैत गुरुजी सन।

कखनो जज कखनो कलक्टर
कखनो तानाशाह बनए।
घरमे करए वकालत कखनो
नामी कोनो ओकील सन।

देशक जवान सन बन्दूक टांगए
बौआ कखनो अप्पन कान्हपर।
कखनो गामक बनए सरगना
बजबए सभा दलानपर।

नाटककार आ कथाकार ओ
देशक उद्भट विद्वान सन।
भीमसेन सन चित्रकार ओ
मूर्तिकार विश्वकर्मा सन।

माटिक मूर्ति बनाबए बौआ
अनमन कोनो कुम्हार सन।
आखर लिखए मोतीक माला
अनमन राजेन्द्र प्रसाद सन।

लक्षणसँ लागै छथि बौआ
अनमन श्रवण कुमार सन।
बौआ हम्मर सभ गुण आगर
जगतक सिरजनहार सन।

चन्द्रशेखर आजाद सन बौआ
बुच्ची लक्ष्मी बाई सन।
बुच्ची भाँजए तरुआरि कखनो
बौआ गरजए शेर सन।

केतबो अभावमे रहै छी तैयो
गद्-गद् मन रहैत अछि हम्मर।
बौआ बुच्चीक बाल लीला
अनमन भगवती भगवान सन। ❑

ताम-झाम

अबूझ देशक आम जनता
बूझए तैयो सत्ताक ताम-झाम
मुदा सबहक मुँहपर
अछि लागल लगाम।

सत्ता आजाद आइ
जनता गुलाम सन
निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि
प्रजातंत्रपर हाबी सामन्तवाद।

कहौनिहार बुद्धिजीवी
ओहो भऽ गेल बहीर आब
आ की मुइन लेलक कान

सन्देह हमरा मनमे।

साफ-सुथरा जनता
देखए ने आगू खनता
आँखिसँ ओ आन्हर
आकि मुइन लेलक आँखि ओहो।

साँच बजनिहार सभ
जीरोपर आउट भेल
साजिस फरेब देखू
मारि रहल छक्का। ❑

माताक आँचर

गुजरल जमाना जे मनुक्खक
ओकरे कही इतिहास हम
जे अमर नाम इतिहासमे
बस! नाम ओहने हो हम्मर।

मनुक्खक बीच हमहूँ मनुक्ख
हम जीवी मनुक्खक कल्याण हित।

आदर केर भूखल रही हम
आदर करी इंसानकेँ

सदाचारक अदला-बदली
हम करी समस्त संसारमे।

निज वतनहित जीबी मरी
गद्दारसँ सदिखन लड़ी।

जे राहमे भटकल राही
हम पथ प्रदर्शक ओक्कर बनी।
जइ खूनसँ पलली-बढ़ली
रहए प्रफुल्लित सदिखन जननी।

सिनेह भरल माताक आँचर
कखनौं कलंकित नहि करी।

जीयब हम मात्रहि सात दिन
आ मरि जाएब दिन साते
आठम नहि कोनो दिन आएल
भूत, भविष्य आ वर्त्तमाने।

जहिया धरि जीबी, जइ दिन मरी
जननीक प्रयोजनसँ मरी।

मातृ सेवकक रूपमे, गनती
हो हम्मर संसारमे

जननीक उज्जर दूध सन
हो आचरण उज्जर हमर।

सभ दिन रहए इजोत
हम इतिहासक एहने अंश बनी। ❑

लाल किरण

हे यौ सूरज सुनू, लाल किरण सुनू
हम तँ बजबै छी अपनेकेँ एक भोरसँ
बिसठी चढ़ौने आ गाँती पहिरने
ताकै छी टुकटुक मोहारपर सँ
हम तँ बजबै छी अपनेकेँ एक भोरसँ।

टिनही कटोरीमे साग-भाग रखने छी
पेट गुदगुदाइत अछि तेतेक भूख लागल अछि
अवसरक ताकमे, बैसल जमातमे
कौआ धपाइत अछि चारपर सँ
हम तँ बजबै छी अपनेकेँ एक भोरसँ।

बर्फहुसँ कनकन कछेरक ई माटी
नोरहिसँ भीजल पुरान मैल गाँती
कनकनीसँ पैरो ने ठहरए जमीनपर
दलकैत अछि काया बसातक डरसँ

हम तँ बजबै छी अपनेकेँ एक भोरसँ।

रहि-रहि लगातार रमकैए पछबा
गामक पड़ोसिनकेँ मारि देलक लकबा
कोनामे दुबकल अनिष्ठक आशंकासँ
भुकुर-भुकुर कानै छी नोरहिसँ
हम तँ बजबै छी अपनेकेँ एक भोरसँ। ❑

दमन चक्र

बदलल-बदलल रंग जहाँ केर
बदलल-बदलल झाँकी
बदलल समीरक चालि-ढालि
बदैल गेल लिखल पत्रक पांती।

बदलल दशा आइ वन-बागक
आ बदलल नदी पहाड़ो
बदलल लोकक रहन-सहन
आ बदलल स्वर संवादो।

द्रुत गतिएँ अछि बढ़ि रहल
यातायात आ संचार माध्यम सेहो
स्वाद बदैल गेल खाद्य पदार्थक
बदलल आहार-बिहार मनुक्खक।

बदलल लोक, लोकक कार्यशैली
छूटल घरे सभ कागजात, पैसाक थैली
बदलल केतेक स्टाइल देखू
मोबाइलमे समटल फाइल।

छोड़लक जमीन पहुँचल चानपर
भारतीय, अमेरिकी, रूसी
सभ धरतीवासी बनि रहल
आइ नवीनतम चानवासी।

नहि बदलल अतीत कालक सोच मनुक्खक
रंग-भेद आ जाति भेद कलंकक ई दमनचक्र
लगा रहल ई प्रश्नचिन्ह मनुक्खक श्रेष्ठतापर
बुझा रहल अछि चानो तक लदले जाएत ओकरा पीठपर। ❑

अप्पन जिनगी

अप्पन जिनगीक गुणा भागमे
अनकर जिनगीक मोले कोन
बड़ महत्वक बात ई अप्पन
अनकर बातक मोले कोन?

अप्पन भूख, अप्पन प्यास
अप्पन पहिरन अप्पन ओढन
बड़ नीक लागैन अप्पन भोजन
अनकर भोजनक मोले कोन?

अप्पन निन्न, अराम अप्पन
दिन भरिक सभटा काम अप्पन
बड़ नीक लागैन मान अप्पन
अनकर मानक मोले कोन?

अप्पन प्रयोजन, अप्पन आशा
बाटैथ सभकेँ ओ निराशा
सदिखन रहैथ ओ अप्पन आसमे
अनकर आसक मोले कोन?

ई खनदानी बेटा-बेटी
जे बजता से नीके बजता
जे कहता से नीके कहता
अनकर खनदानक मोले कोन?

अप्पन विचारमे डुमल रहता
अनकर विचार कहियो ने सुनता
विचारवान के हुनकासँ बेसी
अनकर विचारक मोले कोन?

अप्पन नेन्ना बड़ दुलारू
लंगड़ो, लुल्हो तँ बाबूए कहता
अनकर नेन्ना बड़ कुलारू
नीको अछि तँ मोले कोन?

फाँसल अतीतक मकड़जालमे
रखने छथि पोसि विषमताकेँ
स्वार्थपरक सिद्धान्तक सोझा
समतामूलक सिद्धान्तक मोले कोन? ❑

माटिक पुतला

पुतला अहूँ, पुतला हमहूँ
हम माटिक पुतला माटिपर।
पुतलाक माँझ संचरित सांस
जीवन्त करए हमरा अहाँकेँ।

माटिक पुतला भखैर जाएत
रूकि जाएत सांसक संचरण।
नहि पता केकरो केतए जाएत ओ
माटिक छी माटिमे मिलब हम।

आगि-पानि आ लहैर समीरक
चलए अहर्निश हमरा अहाँमे।
विवेकशीलता हमरा अहाँमे
तँए जीवश्रेष्ठ कहाबी हम।

विचरण करी इह धरा गगन
संसारक सुन्दर चमनमे।

दोस्ती आ दुश्मनीक भाव सेहो
सभसँ बेसी हमरेमे।

जे नहि जानी से नहि करी
जे जानी से करबाक उचित।
जाधैर पुतलामे सांस रहए
दोस्तीक भाव मजगूत करी।

जहर अमृतक ज्ञान हमरामे
अमृत ली, जहर के कात करी।
हलसल फुलसल हम सभ रहब
जँ अप्पन मीतकेँ मीत बुझी। ❑

चंचल

चंचल नामक एक छल बालक
ओ किसानक बेटा छल।
हट्ठा-कट्ठा काया ओक्कर
मुदा आलसी कामचोर छल।

भागल एक दिन घरसँ
ओ पहुँचल धारक कातमे।
जेतए उफनैत जलक धारमे
शिकार करै छल मछुआरा।

पुरबा-पछबा हवा बहै छल
कल-कल जल छल धारमे।
बहैल गेल मोन चंचलक
ओ बिसैर गेल सभ योजना।

दिन बीतल आ भेल साँझ
जरए लागल दीया-बाती
धारक बगलक गाममे
तैयो सभ मछुआरा व्यस्त काजमे।

रसे-रसे चन्दा मामा
आएल उगि असमानमे।
एक चान चमकै छल नभमे
दोसर स्वच्छ जलक धारमे।

महा मनोरम दृश्य ई
मोहै छल सबहक मोनकेँ
कौतूहल वश एक मछुआरा
पुछलक ओइ बालकसँ।

दिन दुपहरिया एलौं बौआ
भऽ रहल अछि राति आब।
घर छोड़ि घरमुरिया खेलए
बैसल छी किएक कछेरमे?

हम किसानक बेटा छी
घर हम्मर बगलक गाममे।
कहैत अछि सभ चंचल हमरा
रूसि कऽ भागल छी गामसँ।

पाबि गुरु अपने सनक
हम धन्य भेलौं आइ एतए
आदेश होअए राति बिताबी एतइ
प्रात:काल निज गाम जाइ।

सूर्योदयसँ पहिनहि
आइ चंचल जागि गेल
मान्यु गुरुक कए नमस्कार
अप्पन घर प्रस्थान केलक। ❑

बेटी

कहि-कहि बेटिया
बनौले नौकरनियाँ
मैया बैमनियाँ गे।
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए?

उठली सबेरे हम
बहारली घर दुअरिया
मैया बैमनियाँ गे

पढ़ाइएक बेरमे
गोबर लेलेँ ठोकबाए
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए?

पाथि-पाथि गोबर हम
सजली मचनियाँ
मैया बैमनियाँ गे
इसकुल बेरमे
लकसी देलेँ धराए
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए?

घुमि-घुमि बाध-बोनमे
बिछली हम लकड़िया
मैया बैमनियाँ गे
अबिते घरबा चूल्हा
लेलेँ फुकबाए
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए?

भिनसरेसँ साँझ धरि
हम टहल बजेलियौ
मैया बैमनियाँ गे
तैयो बाबू कहलक
अधक पारि
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए?

देखि-देखि रहनियाँ तोहर
सालय मोर करेजबा
मैया बैमनियाँ गे
कहियो ने सुखलइ
अँखिया के नोर
कथी ले दुखिहारिन देलेँ बनाए? ❑

खानाबदोश

सिरसँ ऊपर जलधार बहए
आ हम्मर तरबाक सीर जरए।
कुक्कुर करए स्नान दूधसँ
नेन्ना हमर प्यासे मरए।

कुक्कुरक भोजन मटन मलाइ
आ नीक साबुनसँ स्नान।
हम्मर नेन्ना खाए सुक्खल रोटी
चिकनी माटिसँ मीजय माथ।

कीमती वस्त्र, आभूषण ओकरा
रंग-बिरंगक कुर्त्ता-पैन्ट।
हमरा नेन्नाकेँ एकटा अंगा
खीचय आ फेर पहिरए ओएह।

एक्केटा इंसानक बंगला
दिल्ली, कलकत्ता बम्बइमे।
नदी कछार, पोखरीक, भिण्डापर
हम कछर काटी एक्के घरमे।

माल-मवेशी, बकरी, छकरी
एक्के घरमे निर्वाह करी।
अप्पन खास मेहमानों के हम
माले मवेशीक संग राखी।

हप्ते दिनपर आबए नोटिश
अंचल आ तहसीलसँ।
आँखि देखाबए टोपीबला
सरकारी जमीन खाली करू।

खिसकल जमीन तरबाक तरसँ
हम बनल छी खानाबदोश।
भटकल फिरै छी गाम-शहर
सभटा कहैर हमरे ऊपर।

ऐमला, फैमला लूटि रहल
हमरे सरकारक नामपर।
पण्डित आओर पुजारियो लूटए
हमरा भगवानक नामपर।

एक्केटा भगवानक नामे
सैंकड़ो सैंकड़ बिग्घा जमीन
हिस्सा बुझि बन्दरबाँट करए
धर्मक ठीकेदार सभ।

की करत बैसल न्यास वोर्ड
केतए-केतए ओ करत खोज
गरीब बेचारा की करत
हारल नटुआ झिटका बीछए।

कोट, कचहरी, थाना फाना
डण्डा सिपाहियोक हमरे लेल।
सभ साजीसक शिकार हमहीं
सरकारोक सभटा फन्दा हमरे लेल।

थोड़-बहुत कर्जाक कारणेँ
हम्मर जिनगी जहलमे।
ओ लूटि खजाना चानी काटए
जर्मन, इटली आ फ्रांसमे।

यौ, अहीं कहू! ई केहेन न्याय
लूटए जमाना हाय! हाय!!
सिरसँ ऊपर जलधार बहए
आ हम्मर तरबाक सीर जरए। ❑

गंगा लाभ

चमैक रहल अछि साँच जकाँ
आस्थामे लपेटल झूठ ई।
स्वार्थोपर परदा करए ई
सोझामे लागल टाट जकाँ।

काशी, प्रयाग, मथुरा
कावा आ मक्का मदीना।
पसरल अछि लोकक आस्था
गंगा सागर स्नान धरि।

माघ मास, दलकए काया
सभ दुबकल अप्पन मुनहरमे।
अगियासी केने सभ घरे-घरे
अइ पालासँ बँचवाक लेल।

जेकरा चाही संरक्षण
आइ छ-मसिया चिलका जकाँ
परिजन नेने जा रहल
तेकरा कराबए गंगालाभ।

एक पंथ दुई काज
माइक गंगालाभ हेतैन

आ ओ मुक्त भऽ जेता
दिन-राति सेवा-टहलसँ।

मुदा हमर अछि आस्था
ओझराएल हमरा घरे धरि
बाप, मतारी आ बुजुर्ग घरक
हम्मर आस्थाक केन्द्र छथि।

हम नहि झांकी मन्दिर-मस्जिद
आ ने झाँकी काशी-कावा
बाप-मतारी जेतए हमर
ओ माटि हमर मन्दिर असल।

करा लेलक गंगा लाभ
ओ अप्पन माएकेँ
उताइर लेलक कर्ज ओ
अप्पन माइक दूधक।

मुदा नहि कराएब गंगालाभ
हम अप्पन माएकेँ
सेवा करब दिन-राति हाथसँ
हगनी-मुतनी सभटा करब।

अन्तिम क्षणमे माइक
सिनेहक स्मृतिमे अप्पन।

आँखिसँ झहरल नोरसँ
माइक गंगास्नान कराएब।

हम्मर माए पालामे दलकैत नहि
हमरा कोरमे हँसैत मरती।
हम अप्पन मातृभूमिपर अप्पन
माइयक गंगालाभ कराएब। ❑

पसरल निरासा

बनि काल कराल विकराल
विदारए ई जनजन केर भाल गे।
चिबा रहल काँचे मानवकेँ
देखहिन कोरोना माइ गे।

दिन-राति बटोरए बदनामी
घाती कोरोना माइ गे।

महा सबल ई आक्रमण कारी
आ देश केर लाचारी गे।
सुविधाहीन सभ अस्पताल
नेता सभ छुच्छे गाल बजाबए माइ गे।

अन्ध विश्वासक गाड़ी, केते अगारी
नेता सभ थारी पिटबाबए माइ गे।

टाल ठोकए आइ कोरोना
तोड़ए ई सबहक शान गे।
डॉक्टर जे भगवान कहाबए
तेकरो हरण करइ ई प्राण गे।

बनाए लाश केर मृगछौना
करए अट्टहास कोरोना माइ गे।

मचा देलक कोहराम कोरोना
देश-विदेश धरि माइ गे।
यत्र-तत्र सर्वत्र ताण्डव करए
ई कोरोना माइ गे।

झकझोरि रहल ई अर्थ तंत्रकेँ
ज्ञानीक ज्ञान हेराएल माय गे।

देशमे लागल लॉकडाउन
सभ काज बन्न भेल माइ गे
भरल-पुरल परिवार जेकर
कहए एकरा सुअवसर माइ गे।

भूख डाइन केलक तबाह
देहारी मजदूरकेँ माइ गे।

सभ बमकैत अछि ओकरेपर
बमकत ओ केकरापर माइ गे।
ने घरक ने घाटक ओ
मरए मजदूर उफाँटमे माइ गे।

फँसल मझधारमे कामगार
सभ उद्योग बन्न भेल माइ गे।

चर-चाँचरमे वौआ रहल रहल
मजदूरक बच्चा माइ गे।
जेकरा पीठपर दौड़ल सरसर
रेलगाड़ी माइ गे।

पसरल निरासा ओकरा जिनगीमे
गुज-गुजअन्हार भेल माइ गे। ❑

परम्परा

अर्थक गाड़ी बढ़ल अगारी
पड़ल माथपर बोझा भारी
टहल टिकौरा केर फुरसैत नहि
खाट पकड़ने बाप मतारी।

गेल अरेरल बाप-मतारी
कऽ नहि सकला सेवादारी।

मरला पर अंगरेजी बाजा
गाममे बँटता लोटा-थारी।

भरल दलानपर बाबू-भैया
बजा कऽ अनला नीक गबैया।
लोक पुछैए केकर बराती
साँझे मरला भाय सोबराती।

नर नारायण दुनू ठकाइए
घरक भेदिया ठकने जाइए।
बाहर देवता घरमे भूत
गरदैन लटकल काँचे सूत।

कहि-कहि अल्ला आ भगवान
भूलल सभ बाप-मतारी-अब्बाजान
रंग जमौने घरमे नारी
घर-घर भदबा बाप-मतारी।

चलिते रहतै कर्मक गाड़ी
बौआ करता भोज जबारी।
अपन परम्परा जिन्दा रखता
चाहे बीकैन घर-घराड़ी। ❑

बसन्त बहार

ठुमकए नेन्ना भुटका ठुमकए
ठुमकए बुढ़ जवानो ठुमकए
आएल बसन्त आएल बहार
नाचए नवतुरिया तालपर।
पीयर-पीयर सरिसोक फूल
आई रसालक थिरकए पल्लव
सभा बजौलक हरियर सुग्गा
देखियौ सिमरक गाछपर।

अधगर्मी-अधसर्दी नेने
राति इजोरिया चकमक चान
हलसल कुदरत खोललक कान
कोइली कुहकए गाछक फुनगीपर।

हिलमिल नाचए फुलवारीमे
सभ फूल बसातक लहैरमे
भाव विभोर देखू ललमुनियाँ
नाचए ओकरे तालपर।

खिलखिलाइत अछि घेंटजोड़ि
सभ बिसैर गेल ओ राग द्वेष
मुदा मनुक्ख गेठरी बन्हने अछि
मरैए अपनहि आनिपर। ❑

उन्माद

धर्मक मर्म अथाह, थाह नहि
अछि अबूझ बहुतो ज्ञानीसँ।
जाति वंशक नाम धर्म नहि
जे बूझए धर्मक ठीकेदार सभ।

धर्म ओ बेवहार अछि
जे धारण करबाक योग्य हो।
दिन-राति धर्मक बात करए
आ ओएह समूहपर घात करए
ई धर्म केहेन।

सेवा मनुक्खक करए मनुक्ख
अछि इएह मनुक्खक धर्म असल।
लड़ाबए मनुक्खकेँ मनुक्खसँ
ओ स्वार्थमे डूबल चाटुकार।

अप्पन वर्चस्वक लड़ाइमे
ओ सेवा धर्मसँ हटि रहल।
तिलकेँ तार बनाए फँसाबए
सभकेँ ओ भ्रम जालमे।

देव भाषाक उक्ति अछि
लक्ष्मी बसए गोबरमे।

नहि मनोहर रूप एक्कर
तैयो मानी पवित्र एकरा हम।

शुभ बिआह, मुन्डन उपनैनमे
अनेकानेक पावनि-तिहारमे।
पूजा-पाठक शुभ अवसरपर
अइ गोबरसँ ठाँव करी।

समस्त जीवक जान जल
एक्कर भाग अधिक तेँ कुदरतिमे।
नदी-झील आ तलावमे जल
हिलकोर मारए ई समुद्रमे।
पूजा करी गंगा जलसँ
जइ जलमे मल मुर्दा बहए।

ई सभटा मानल बात अदौसँ
मानल जाइत अछि सर्वत्र आइयो।
केतबो बढ़ल विज्ञान आगू
जीवन्त अछि आस्था विश्वास आइयो।

परञ्च भऽ रहल अन्धविश्वास हावी
अइ आस्था आ विश्वासपर।
जे बाधक शान्ति व्यवस्थामे
आ रोड़ा देशक अखण्डतापर।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई

कथित ई चारू धर्मक खाम्ह।
बढ़ा रहल उन्माद धर्मक नामपर
अइ धर्मक ठीकेदार सभ।

बाहर इजोत, घर गुजगुज अन्हार
घृणित हाड़ पूजित पहाड़ ई आस्था।
देखू मानवता बिलखि रहल
सर्वत्र धार्मिक उन्मादसँ। ❑

भूतक नाँगैर

हम कहाँ कहै छी दोष अहाँक
दोष अछि ओइ पुरान एनाक
जेकरा सम्हारि रखने छी आइ धरि
अहाँ अप्पन मनक अँटारीमे।

बढ़ावा दैत रहलौं सभ दिन विषमता केर
मनुक्ख-मनुक्खमे भेद करैत रहलौं
आ जीबैत रहलौं पेटकनही बिलाइ जकाँ
अहाँक नजैरमे समताक मोले कोन।

बदलल जमाना, मनुक्ख पहुँचल चानपर
अहाँक भाव इनारक बेंग जकाँ रहिए गेल

जेकरासँ कटैत रहलौं सभ दिन विषम बूझि
ओ अपनाकेँ विषम नइ सम बुझैत अछि।

अनसोहाँत तँ लगबे करत अहाँकेँ
दुपहरियामे बान्हपर लागल घूर जकाँ
ऊँच-नीच तँ बुझेबे करत अहाँकेँ
ऊबर-खाबर टाँट खेत जकाँ
झूठक जूठ मुँहपर लागल
स्वीकारब केना अहाँ साँच बात
पकड़ने रहू, भूतक नाँगैर आइ धरि
आ ओंघराइत रहू पाँक भरल डबरामे।
यो आबो बदलू अप्पन ऐना
फेंक दिअ डबरामे ओइ पुरना ऐनाकेँ
सम्हारि रखने छी आइ धरि जेकरा
अहाँ अप्पन मोनक अँटारीमे। ❑

छाप अमिट

सत्य न्यायपर चलल कलम
समय, दशाक ई छाप अमिट।
कविता करब आसान नहि
नहि आसान कहाएब कवि।

स्वीकार्यता हो साँच बातक
मिथ्याचरणक पर्दाफाश

ताना-बाना कल्याण मार्गक
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय।

साम्राज्य जेतए सामन्तवादक
ताण्डव जेतए आतंकवादक
वंशवादपर चोट जेतए नहि
खेतरा जेतए समाजवादपर।

सबल विरोधक द्वारा खुलल
पोषक कम शोषक घनेरो
तैयो कलम नहि रूकि सकए
तँ लिखए कविता कालजयी।

तखन खुलय सभ बन्न राह
तनि जाए बाँहि सभ नौजवानक।
मान बढ़ए देशक तखन
मोती उगलए एहने कविता।

समय दशा विपरीत कलम
सत्तासँ भयभीत जखन
चाटुकारिता पक्ष धारिता
नहि कविता ई कुटिलता थिक। ❑

जगजाहिर

छिटकी मारि गिरबैत रहल
आ गिरा रहल हमरा आइयो।
बपहारि कटै छी हम आ
ओ हँसि रहल हमरापर आइयो।

अप्प्न देशक सम्मानमे हम
क्रियाशील रहलौं सभ दिन।
अप्पन देशक विकास हित हम
क्रियाशील छी आइयो।

स्वार्थसिद्धिमे ओ अप्पनरंग
बदलैत रहल गिरगिट जकाँ।
मनसा ओक्कर जग जाहिर भेल
तैयो रंग चढ़ौने ओ आइयो।

ओकरे बीनल मकड़जालमे
फँसि कऽ गिरल रहलौं हम।
भय रहल छी सचेत हमहूँ
मुदा ओ रचि रहल अछि जाल आइयो।

विकसित रहैत ई देश अप्पन
सत्तैरकेँ छिटकी मारि गिरौलक।

सत्तरिक छिटकी सहत कोना
नहि सोचि रहल ओ आइयो।

ओ पर निन्दक पिसुन पातकी
स्वार्थमे डूबल देशक घाती
मान, सम्मानकेँ बेचि मनाबए
अपने घर दिवाली आइयो। ❑

अठन्नी

कोना हेतइ नीक
अइ अगत्ती बिलाइकेँ
काँचे चिबौलक सभकेँ
बिना नोन मिरचाइ-के।

दुबकल रही बोहैरमे
आहट ओकर पाबि-पाबि
बातो ने मानै छल
बेकहली टुन मुसरी सभ।

एकाएकी चटलक बिलाइ
सभटा हम्मर बच्चाकेँ
कोना हेतइ नीक ओकरा
वंश उजारैन बिलाइकेँ।

ललकैत बाजल मूस आब की बजै छी
अइ वंश उजारैनके छाती जुड़बै छी
देखू जमाना केते आगू बढ़ै छै
रेल आ जहाज टिकट ऑनलाइने बिकाइ छै।

सभटा डेराएल मूस भागि गेल दिल्ली
बिलाइ घुटमुटाएल घरे छटपट करै छै
घर बिना मूसक ओ दूधोक अकाल छै
लटि गेल बिलाइ, ओकर हालत खराब छै।

जा दिल्ली भोकना बिलार सभ मूस भेल
छूटल जे बाध-बोन हक्कन कनै छै
धेलक पछोर वंश उजारैन बिलाइ सभ
दिल्लीमे जा गुरुआइन कहबै छै।

पुरने अधन्नीकेँ कहि-कहि अठन्नी
अन्ध विश्वासक जाल ओ पसाइर रहल छै
ऊपरसँ समता आ भीतर विषमता
ओ स्वार्थक धारमे नहा रहल छइ। ❑

उपदेशक

सह-सह करैछ धर्म उपदेशक
तैयो बढ़ि रहल अधर्म केना
गली-गलीमे वैद्य बैसल
तैयो बढ़ि रहल जादू-टोना।

अंगरेज भागल देशसँ
आ देश भेल आजाद
नेता सह-सह करए देशमे
जनता नेतृत्व विहीन केना।

इसकुल भेल बोनहरदी
अभियानमे आएल गर्मी
बाल कल्याणक योजना
बढ़ि रहल बाल मजदूर केना।

शराब बन्दी रफ्तारमे
नशाबन्दी गौण देशमे
सर्वत्र अनैतिक कारोबार
समताक भाव जागत केना।

दिन राति समताक बात करी
विषम भाव बेवहारमे

भोजन वस्त्र आवास शिक्षामे
असमान जमीनक फर्क केना।

नीति विहीन नेता अभिनेता
द्व-धारी तलवार जकाँ
करए अमीरक संरक्षण आ
करए गरीबपर वार। ❑

गिरहकट्ट

ओ केहेन गिरहकट्ट
कटलक जेब फटाफट
हमरे लाठी हमरे उठाकऽ
मारलक फटाफट।

रंग बदलबामे माहिर
गिरगिट सन चालि ओकर
करब गरीबक काज सभटा
देलक आस्वासन फटाफट।

हँ-मे-हाँ मिलौलक
सभ जनताकेँ ओ फँसौलक
सामन्तवादी रेल ओ
चलौलक धकाधक।

जनतासँ जन-धनकेँ
खाता खोलबौलक
पन्द्रह लाखक वादा मुदा
चौअनियो ने पठौलक।

सभ माए-बहिनकेँ ठकलक
तेतेक महंगी बढ़ौलक
ढन-ढन करए घरे-घरे
सभटा गैसक सिलिन्डर।

देखाकऽ नकली सहानुभूति
ठकलक सभटा गरीबकेँ
अमीरकेँ अमीर आओर
बनौलक गिरहकट्ट। ❑

धार्मिक

हर हर गंगे, रहब उदण्डे
कियो हमरा की करत
हम मार्मिक नहि कहियो
धार्मिक छी धार्मिके रहब।

जे मोन कहत करबे करब
छी मनमौजी सभदिनसँ

लहरा देब धधरा माहौलमे
कियो जड़ि मरए हम बँचले रहब।

हम धार्मिक छी से जानिकऽ
नै लेत नाम हम्मर कियो धधराक मादे
पचि जाएत अध सभटा हम्मर
भऽ जाएब पवित्र गंगाजलसँ

हत्या, बलात्कार अत्याचार आ
उत्पीड़नकेँ पचाएब कोन पैघ बात
सामरथकेँ दुख नाहि गोसाईं
प्रायश्चित करब पापमुक्त भऽ जाएब।

भगवान हम्मर मन्दिरो हमरे
लोकतंत्र आ समताक हल्ला करब
भीतर विषमताक व्यापार तँ चलिते रहत।

ओ प्रजातंत्रक हल्ला करिते रहत
तंत्र हमर सबल रहबे करत
प्रजातंत्रक रीढ़ हमरे भागे कमजोर अछि
तँए हम अप्पन काज सुतारिते रहब।

❑❑❑
❑❑
❑

Notes